मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

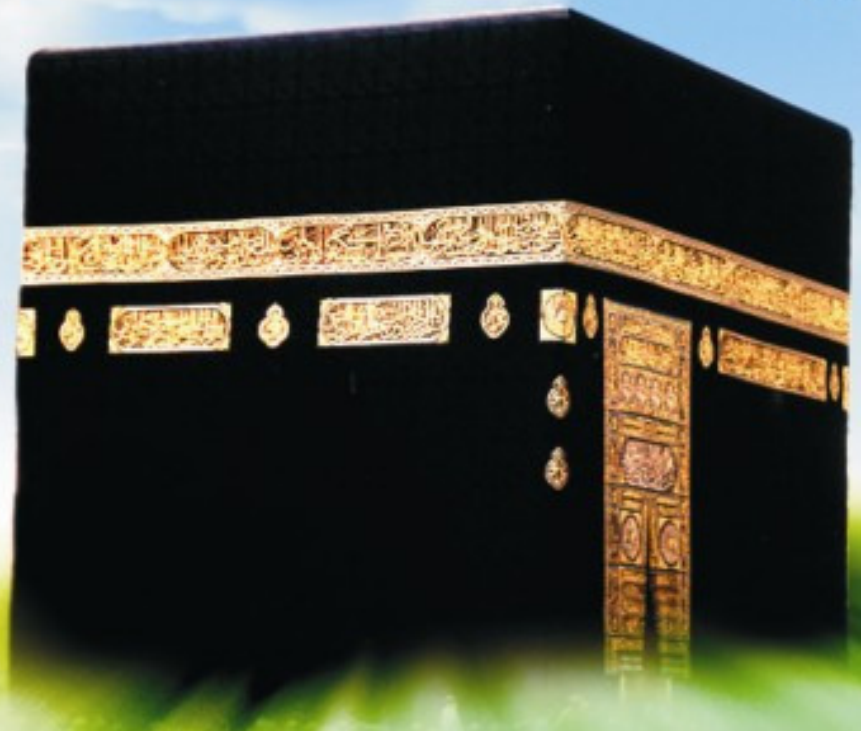

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

अय्यामे तश्रीक़ और तकबीराते तश्रीक़

नवीं ज़िलहिज्जा की फ़ज्र की नमाज़ के बाद से तेरहवीं ज़िलहिज्जा की अस्र की नमाज़ के बाद तक। हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से मर्दों पर बुलन्द आवाज़ से और औरतों पर आहिस्ता आवाज़ से तकबीर पढ़ना वाजिब है।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّااللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لِلّٰهِ الْحَمْدُ

और अगर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इमाम तकबीर पढ़ना भूल जाये तो मुक़तदियों को चाहिये कि वो बुलन्द आवाज़ से तकबीर पढ़ें। ये तकबीरें एक बार पढ़ना वाजिब और तीन बार पढ़ना सुन्नत हैं।

ईदुल अज़्हा के दिन की सुन्नतें

☆सुबह को जल्दी उठना। ☆मिस्वाक करना। ☆गुस्ल करना। ☆अच्छे कपड़े पहनना।

☆ख़ुशबू लगाना। ☆ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ना। ☆ईद की नमाज़ से पहले कुछ न खाना। ☆ईदगाह जल्दी जाना। ☆ईदुलअज़्हा की नमाज़ के बाद कुर्बानी का गोश्त खाना। ☆पैदल जाना। ☆एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापिस आना।

☆रास्ते में तकबीरे तश्रीक़ पढ़ते हुए जाएं:

(اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّااللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لِلّٰهِ الْحَمْدُ)

कुर्बानी का तरीक़ा

कुर्बानी का सुन्नत तरीक़ा ये है कि जानवर को कम से कम तकलीफ़ दी जाये। उसे ज़्यादा तड़पाया न जाये। ज़मीन पर लिटाने में ऐसा तरीक़ा न अपनाया जाये कि जिससे जानवर घबरा कर बिदकने लगे।। जब जानवर कुर्बानगाह में आ जाये तो उसे जल्द ज़िबह करने की कोशिश की जाये। छुरी और रस्सी वग़ैरह पहले से तैयार रखी जाये, फिर जब कुर्बानी का जानवर क़िब्ला रुख़ लिटा दिया जाये तो पहले ये दुआ पढ़ें:

"إِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَ الْأَرْضَ حَنِيْفاً وَّ مَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ،

إِنَّ صَلَاتِيْ وَ نُسُكِيْ وَ مَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لَا شَرِيْكَ لَهٗ

وَ بِذٰلِكَ أُمِرْتُ وَ أَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَ لَكَ"

फिर "بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ" कह कर ज़िबह करे और ज़िबह करने के बाद ये दुआ पढ़े।

"اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ ،وَ خَلِيْلِكَ إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ"۔

अगर किसी दूसरे की तरफ़ से कुर्बानी कर रहा हो तो "مِنِّيْ" की जगह "مِنْ" और "مِنْ" के बाद जिसके तरफ़ से कुर्बानी कर रहा है उसका नाम ले।

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:९ सितम्बर २०१४ ई० वर्ष:६

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

इस्लामी एकता.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

कुर्बानी – एक सकंल्प का नवीनीकरण.....३
डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

जब हम बदलेंगे तो दुनिया भी बदल जायेगी.....४
मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

तीन गंभीर बीमारियाँ.....६
मौलाना अज़ीज़ुल हसन सिद्दीक़ी

इस्लामी अक़ीदा.....८
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

भैंस की कुर्बानी का हुक्म.....९
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

समाज का सुधार कैसे हो.....१२
मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

कुर्बानी – एहकाम व मसाएल.....१४

ये देश.....१७
मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

फ़य्याज़ी और सख़ावत के नमूने.....२०
प्रोफ़ेसर सैय्यद मुहम्मद इज्तिबा नदवी

तुर्की इस्लामी ख़िलाफ़त की राह पर.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

इस्लामी एकता

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद स0अ0 के आने का बुनियादी मक़सद ही यही था कि सभी इन्सानों को एक अल्लाह की बन्दगी में लाकर एक लड़ी में पिरो दिया जाये। इसी एकता की ओर इशारा करते हुए आप स0अ0 ने फ़रमाया था: (तुम्हारा रब भी एक और तुम्हारा बाप भी एक) दूसरी जगह फ़रमाया: (तुम सब आदम की औलाद हो), रंग, नस्ल, ख़ानदान, बिरादरी और ज़बान व वतन के हर बुत को आप स0अ0 ने तोड़ दिया और इस तरह की सीमांए मिटाकर फ़रमाया: (किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर, किसी ग़ैर अरबी को किसी अरबी पर, किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई बरतरी हासिल नहीं सिवाए तक़्वे के) जो जितना ज़्यादा अपने मालिक का फ़रमाबरदार होगा, उसके हुक्मों को पूरा करने वाला और उसके बन्दों के साथ अच्छा सुलूक करने वाला होगा वो अल्लाह के यहां बड़ा है।

आप स0अ0 ने इन्सानों को ऊंचा उठाया, मख़लूक के सामने हाथ फैलाने और सर झुकाने से उसको निकाल कर एक ख़ालिक़ के सामने सर झुकाने की शिक्षा दी। गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर दुनिया की नेमतें अता फ़रमायी। कमज़ोर वर्ग के लोगों को उठाकर मक्का के सरदारों की सफ़ में लाकर खड़ा कर दिया। मृत्यु से पहले हज़रत ओसामा बिन ज़ैद रज़ि0 को सेनापति बनाकर बता दिया कि हर प्रकार की ऊंच नीच ख़त्म की जाती है।

मानव एकता के ये वो उदाहरण हैं जो संसार के इतिहास में नहीं मिलते। इसी मानवीय एकता का परिणाम था कि दूसरी सदी शुरू होते होते वो लोग जिनको समाज में कोई दर्जा प्राप्त नहीं था और वो गुलामी के बदतरीन दौर से गुज़र चुके थे, जगह–जगह फ़ज़ल व कमाल के इमाम बनकर चमके और दुनिया ने देखा कि इन्सानी समानता का जो पाठ दुनिया को दिया गया था उसने क्या असर दिखाया।

इस्लामी शिक्षांए रहती दुनिया तक के लिये हैं। जिस दीन में बड़ी बड़ी हद बन्दियां तोड़ दी गयीं हों, हर तरह की ऊंच–नीच ख़त्म कर दी गयी हो और जिसने अपने सभी मानने वाले को हर प्रकार की भ्रान्तियों से बचने का आदेश दिया हो वो आपस ही में एक दूसरे के सामने हो जायें और ज़रा–ज़रा सी बात पर आपस में दीवारें खड़ी कर दी जांए और कोई एक दूसरे की बात सुनने का रवादार न हो, बहुत ही छोटी–छोटी बातों पर जहां मुनासिब और नामुनासिब के कोई दूसरा शब्द लाना ठीक न हो। जहां केवल सभ्य या असभ्य का मसला हो और वो अपना ख़ास तरीक़ा और अपने ख़ास शौक की बात हो, इस पर सब कुछ कर गुज़रना और दूसरे को नास्तिक समझ लेना और उसकी जान व माल और इज़्ज़त व आबरू के पीछे पड़ जाना, इसको सिवाए इन्तिहाई नासमझी के और क्या कहा जा सकता है?!! ये वो लोग हैं जो जानबूझकर या अनजाने में दीन के दुश्मनों की हाथ की कठपुतली बने हुए हैं।

जिस दीन के मानने वालों में हर तरह समानता मौजूद हो, रब भी एक, बाप भी एक, जिस रसूल की पैरवी करनी है वो भी एक, जिस किताब पर अमल करना है वो भी एक, शरीअत भी एक, व्यवस्था भी एक फिर इन समानताओं के बाद कब इस चीज़ की संभावना रह जाती है कि छोटी–छोटी बातों पर उलझा जाये। सीरत का नमूना सबके लिये है और रहती दुनिया तक के लिये है। वही सबके लिये प्रकाश का ऐसा स्तम्भ है कि आदमी उसकी रोशनी में स्वयं अपनी कमियां खोज सकता है। अपने ऐबों पर ध्यान दे सकता है। ये मोमिन का मिज़ाज होना चाहिये। उसको "मोमिन का आइना" कहा गया है। जब किसी दूसरे में कोई कमी नज़र आये तो आदमी उसे अपनी कमी समझे, चेहरे के दाग़ जो आइने में नज़र आते हैं वो ख़ुद अपने चेहरे के होते हैं, आइने के नहीं होते! आज हम लोगों का हाल ये हो गया है कि अपनी आखों के शहतीर नज़र नहीं आते और दूसरों की आखों के तिनके भी नज़र आ जाते हैं। बिखराव के ज़माने में सबसे बड़ी ज़रूरत ये है कि एक दूसरे की ग़लतियों की अनदेखी की जाये। व्यक्तिगत रूप से भी सामूहिक रूप से भी। केवल सुधार के लिये जो कोशिशें हो सके ज़रूर करें। ये ज़िम्मेदारों के लिये ज़रूरी है लेकिन बेज़रूरत किसी को सबके सामने बेइज़्ज़त कर देना बहुत गुनाह की बात है।

वर्तमान हालात में इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि एकता के लिये आधार खोजे जायें और ज़ाहिर है कि उसके लिये दो बुनियादें ऐसी हैं जिनसे कोई असहमत नहीं हो सकता है। एक अल्लाह की किताब और दूसरे अल्लाह के रसूल स0अ0 की बातें और आप स0अ0 का मुबारक तरीक़ा। इसका जितना गहराई से अध्ययन किया जायेगा फूट स्वयं ही समाप्त हो जायेगी। विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों के लिये एकता का यही रास्ता है।

कुर्बानी

एक सकंल्प का नवीनीकरण

डाक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

ईदुल अज़्हा मुसलमानों के लिये एक सकंल्प का नवीनीकरण है, जो आज से हज़ारों साल पहले अबुल अम्बिया हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अपने रब से किया था। यही वो वादा है जो इन्सान के अपने निर्माता के साथ सही संबंध का आइनादार है और यही वो वादा है जो ख़ुदा से सच्ची मुहब्बत करने वाले बन्दों की सही पहचान है। जिस मुहब्बत के सामने दुनिया की बड़ी दौलत और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वस्तु एक कण मात्र से भी कम है, जिस मुहब्बत के लिये बाप अपने जिगर के टुकड़ की कुर्बानी देने में ज़रा भी देर नहीं करता और वो इस अल्लाही मुहब्बत के क़दमों पर अपनी आख़िरी सबसे क़ीमती चीज़ को अपने हाथों से कुर्बान कर देने के लिये बेताब हो जाता है।

ज़रा आप एक कृपालु पिता का विचार कीजिए जिसके औलाद न हो। फिर बड़ी इच्छाओं और तमन्नाओं के बाद उसे औलाद मिले और वो बेइन्तहा मुहब्बत के साथ उसकी परवरिश करे। उसी को अपनी ज़िन्दगी का इकलौता सहारा माने। यहां तक कि वो लड़का जवान हो जाये और बाप की आंखो की ठन्डक और दिल का सुकून बन जाये और जीवन की सारी इच्छाएं उस पर केन्द्रित हो जाएं, तो अचानक उसे बच्चे को कुर्बान करने और उसको अल्लाह की रज़ा के लिये ज़िबह कर देने का आदेश मिले। फिर वो उस आदेश की पूर्ति में ज़रा भी देर न करे और वो अपने ही हाथों अपने इकलौते लड़के को ज़िबह करने के लिये तैयार हो जाये। सिर्फ़ इसलिये कि ये अल्लाह का हुक्म है। अल्लाह को अपने मुख़लिस बन्दे की ये अदा इतनी पसंद आयी कि उसने क़यामत तक के लिये मुसलमानो को इस कुर्बानी का पाबन्द बना दिया और जानवर की कुर्बानी को औलाद की कुर्बानी का दर्जा दे दिया। ये कुर्बानी दरअस्ल एक जानवर या एक दुम्बे की कुर्बानी नही है, और न अल्लाह तआला पर ये कोई एहसान है। बल्कि दर हक़ीक़त ये अल्लाह तआला से सच्ची मुहब्बत और उसकी रज़ा के सामने हर चीज़ को कमतर समझने और दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत को ठुकराने का एक रम्ज़ है।

ये कुर्बानी इस बात की गवाही है कि जिस तरह अल्लाह की रज़ा हासिल करने का मक़सद बग़ैर इतनी बड़ी कुर्बानी के नहीं हासिल हो सकता, उसी तरह किसी दूसरे सही मक़सद तक पहुंचने के लिये भी कुर्बानी पहली शर्त है। ये इन्सान की बड़ी नेकी है कि अल्लाह तआला कुर्बानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। चाहे वो जान व माल की कुर्बानी हो या माल व पद की का त्याग, किसी छोटे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये हो या बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिये। सबसे पहली शर्त इस राह में ये है कि इन्सान में मिटने व त्याग देने का भाव हो और वो इस पर कार्यरत हो। कुरआन करीम ने इसी वास्तविकता की ओर मार्गदर्शन ये ऐलान किया है कि:

"नेकी को तुम उस वक़्त तक हरगिज़ नहीं पा सकोगे, जब तक अपनी पसंदीदा चीज़ को ख़र्च न करो।" (आले इमरान: 92)

लेकिन कुर्बानी के लिये ज़रूरी है कि अल्लाह तआला की अस्ली मुहब्बत दिल में जाग जाये। हज़रत इब्राहीम अलै0 की मुहब्बत इतनी ख़ालिस और अल्लाह से संबंध इतना सच्चा न होता तो तो वो हरगिज़ इतनी बड़ी कुर्बानी के लिये तैयार नहीं हो सकते थे, लेकिन इस इम्तिहान में उनका खरा उतरना इस बात का ऐलान था कि मोमिन की ज़िन्दगी आज़माइश से भरी हुई और हर समय कुर्बानी है। हर क़दम पर उसे इम्तिहान की मंज़िलों से गुज़रना पड़ता है। और हर मन्ज़िल उससे कुर्बानी की मांग करती है। इसलिये दिल जब ख़ुदा की सच्ची मुहब्बत से भरा हुआ होगा तो बड़ी से बड़ी आज़माइश और उसकी मांग हमेशा मामूली होगी और बेक़ीमत नज़र आयेगा। ज़िलहिज्जा का महीना शुरू होते ही कुर्बानी की याद ताज़ा हो जाती है और 10 ज़िलहिज्जा को इतिहास की ये महत्वपूर्ण घटना पूरी इस्लामी दुनिया में दोहरायी जाती है।

(शेष पेज 7 पर)

जब हम बदलेंगे तो दुनिया भी बदल जायेगी

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

जब कोई क़ौम पतन का शिकार होकर मग़लूब हो जाती है तो वह अपनी योग्यता के बारे में भ्रमित हो जाती है। अपने नेतृत्व व सरदारी के इतिहास पर उसका विश्वास कमज़ोर हो जाता है। अपनी योग्यता के संदर्भ में उसके दिल व दिमाग़ में ग़लत विचार प्रवेश कर जाते हैं। अपने सुनहरे युग से उसका रिश्ता कट जाता है। इन हालात में जब यह क़ौम दुश्मनों के हमले का निशाना बनती है और उसमें अपनी सुरक्षा की वो ताक़त नहीं रहती कि अपनी सुरक्षा कर सके। और उस पर तरह–तरह के आरोप लगाये जायें और उसे अपराधी घोषित कर दिया जाये तो उस क़ौम के अन्दर मरउबियत व मग़लूबियत का एहसास पैदा हो जाता है और अपने सुनहरे युग की ओर वापसी का हौसला पस्त हो जाता है। क़ौमें भी एक इन्सान की तरह हैं। जिस प्रकार मनुष्य का उदय व पतन होता है। मनुष्य तो एक सदी से भी कम समय में अपनी ताक़त व क्षमता खो बैठता है और उसकी कमज़ोरी के बाद ताक़त का ज़माना नहीं आता। लेकिन क़ौम व मिल्लत के उदय व पतन का क्रम इतिहास में हमेशा जारी रहा है। मुसलमानों ने दुनिया के कई बड़े देशों पर शासन किया और उनकी सीमाएं घटती–बढ़ती रहीं और वे उदय व पतन के क्रम से गुज़रते रहे। एक मुसलमान शासक औरंगज़ेब आलमगीर रह0 का शासन आधी सदी तक रहा। मिस्र में मुस्तनसिर बिल्लाहिल फ़ात्मी बिन ज़ाहिरुल अबीदी की हुकूमत पैसंठ साल रही। इसी प्रकार मुस्लिम शासक ख़ानदानो में किसी का शासन 90 साल, किसी का 30 साल और किसी की 500 साल तक रही। चौदह सौ साल के समय में ताक़त का संतुलन बदलता रहा। एक क्षेत्र अगर निकला तो दूसरा क्षेत्र इस्लामी शासन में सम्मिलित हुआ। क़ुरआन करीम ने शासन, ताक़त और अधिपत्य के इस क्रम की ओर इशारा किया है: "फिर हमने अपनी किताब में बनी इस्राईल को मुत्नब्बे कर दिया था कि तुम दो बार ज़मीन पर अज़ीम फ़साद बरपा करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे, आख़िर जब उनमें से पहली सरकशी का मौक़ा आया तो ऐ बनी इस्राईल, हमने तुम्हें उन पर ग़ल्बे का मौक़ा दिया और तुम्हें माल व औलाद से मदद दी और तुम्हारी संख्या पहले से बढ़ा दी।" (बनी इस्राईल: 4–6)

और दूसरी जगह इरशाद है:

"अलिफ़ लाम मीम! रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़लूब हो गये हैं और अपनी मग़लूबियत के चन्द साल के अन्दर वो ग़ालिब हो जायेंगे।" (रोम: 1–3)

मुसलमानों ने दुनिया के बड़े से बड़े देश पर शासन किया है और अधिकतर देश जो मुसलमानों के मातहत रहे, इस्लामी प्रभावों से लाभान्वित होते रहे चाहे इस्लामी शासन रहे या न रहे हो। जैसे – उन्दुलुस (वर्तमान स्पेन) जिसे ख़यानत व ग़द्दारी ने जकड़ लिया और वहां के मुसलमानों को यूरोप वासियों व ईसाईयों के अत्याचार के कारण से फ़रारी की राह अपनानी पड़ी और ये लगने लगा कि इस ज़मीन से इस्लाम हमेशा के लिये मिट जायेगा और मुसलमान इतिहास के पन्नों से मिट जायेगा। लेकिन उस क्षेत्र में सलीबी अत्याचारों के बावजूद इस्लामी आसार बाक़ी रहे। पड़ोसी अरब देश से आने वाले मज़दूर और वहां के वर्तमान शासकों की सत्यप्रियता के कारण से इस्लाम के प्रति आकर्षण की संभावनाएं हुई। इंशाअल्लाह ये संभावना प्रबल होती जायेगी और वहां के शासकों के रवैये में और बेहतरी पैदा होगी। अगर मुसलमानों के क़दम हिकमत व दानाई, मोइज़े हसना और दो वर्गों के बीच उत्पन्न खाई को भरने के लिये उठेंगे, क्योंकि इतिहास और न्याय का ये फ़ैसला रहा है कि पीड़ित को कभी न कभी, कहीं न कहीं बदला मिलेगा चाहे ज़ालिम का ज़ुल्म हद से बढ़ जाये।

उन्दुलुस के साथ साथ जहां इस्लाम फिर से ज़िन्दा हो रहा है और उस पर से धूल छंट रही है, लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं, मदरसे व मकतबे खुल रहे हैं। मस्जिदें आबाद हो रही हैं, इस्लामी आसार व निशान ज़िन्दा हो रहे हैं, मुसलमानों की बुज़ुर्ग हस्तियों को याद किया जाता है और उनको क़ौम का हीरो क़रार दिया जाता रहा है। मध्य एशिया यूरोप में जहां कम्यूनिज़्म इस्लाम का ख़ात्मा करने, उसके चिन्हों को मिटाने और मुसलमानों को इस्लाम से दूर करने के लिये सीने पर सवार था, इस्लाम की ओर वापसी आरम्भ हो गयी है। कुछ समय पहले ऐसा लग रहा था कि ये क़ौम पूंजीवाद के रंग में बुरी तरह रंग चुकी है। बहुत से शासकों ने दावा भी किया था कि ख़ुदा को अपने साम्राज्य से बाहर कर दिया है। बहुत से केवल नाम के पूंजीवादी मुसलमान लेखको ने भी लिखा था कि धर्म को हमने म्यूज़ियम में रख दिया है, इस्लाम और मुसलमानों को ख़त्म करने के लिये हर प्रकार के साधन अपनाये गये हैं, अलहाद

को क़ानून की हैसियत दी गयी, मानवाधिकारों के सभी क़रारों को रौंदा गया, मुसलमानों की आबादी को बिखेरा गया। दीनी साहित्य पर पाबन्दी लगायी गयी, मस्जिदों और मदरसों का विस्थापन किया गया, लेकिन अब मुसलमान इस मुसीबत से छुटकारा पा रहे हैं। इस्लामी मूल्यों को दोबारा ज़िन्दा करने के लिये प्रयासरत हैं। मस्जिदों व मदरसों का निर्माण हो रहा है, पिछले सत्तर साल का लम्बा ज़माना अब एक भयानक ख़्वाब की हैसियत रखता है।

संसार के विभिन्न क्षेत्रों में यूरोप के अधिपत्य के युग में नाक़ाबिले तसव्वुर मुजरिमाना हरकतें की गयीं जिससे मानवीय हत्याओं का एक पूरा इतिहास तैयार हो सकता है जो सामूहिक क़त्ल व लूटपाट, मुसलमानों के साथ पक्षपाती रवैया और उनको फ़क़र व जहल में रखने की कोशिश, व्यभिचार, मस्जिदों की बर्बादी, इतिहास की ग़लत बयानी व पीड़ितों पर आरोप लगाने की घटनाओं से भरी हुई है क्योंकि वो ताक़तवर थे और मुसलमान कमज़ोर। ताक़तवर की बात हर कोई सुनता और हर कोई मानता है लेकिन कमज़ोर की बात न कोई सुनता है और न कोई मानता है।

इन ज़ालिमों ने मुसलमानों के साथ गये अत्याचारों को अपनी मीडिया द्वारा छिपाने का प्रयास किया और अपनी पवित्रता का प्रदर्शन किया। फ़र्ज़ी कहानियों और विचारों के प्रचार के लिये किताबें लिखीं और पाक साफ़ ज़हन व दिमाग़ में ज़हर भर दिया जिसे बहुत से बीमार दिलों ने स्वीकार कर लिया।

अगर हम साम्राज्यवादी युग का इतिहास पढ़ें तो हमारी इस राय को पूरा समर्थन मिलेगा कि अक्सर कम जानकर लेखक जिनका एक विशेष वातावरण में प्रशिक्षण हुआ है। इस ग़लतफ़हमी का शिकार हुए और उन्होंने ताक़त को सभ्य व पाक समझा और समझाने की कोशिश की क्योंकि मनुष्य दौलत व ताक़त से प्रभावित होता है और वह वर्तमान पर ज़्यादा विश्वास करता है। बहुत से लुटेरे काफ़िले को लूटते और बर्बाद करते हैं, मिलने वाले माल व दौलत को अपने संबंधियों और रिश्तेदारों में बांट देते हैं, उन लुटेरों के बारे में उनसे लाभान्वित होने वालों की राय बहुत श्रेष्ठ होती है। वह उनकी सख़ावत व ताक़त की तारीफ़ करते हैं। इसी तरह बहुत सी झूठी ताक़तों ने दूसरी क़ौमों पर हमला किया, उनके माल को लूटा, उनके ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा कर लिया और शुरफ़ा को मतऊन किया बहुत सी कमज़ोर तबियतें उन लुटेरों को शरीफ़ समझने लगीं, और उनकी सत्ता को स्थायी, लेकिन अब कम्यूनिज़्म का ये क़िला ढ़ह चुका है और परेशान क़ौमें क़ैद व बन्द से आज़ाद हो चुकी हैं, आज़ादी का ये सिलसिला जारी है, अब दूसरे और क़िले ढ़हेंगे और दूसरी क़ौमें क़ैद से आज़ाद होंगी, इस आज़ादी के साथ ज़हनी आज़ादी और सक़ाफ़ती आज़ादी की भी ज़रूरत है जिसके लिये बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

इस दौर में अक्सर मुसलमानों के अक़ीदे बिगड़ गये हैं क्योंकि जब उन्होंने छिपते सितारों को देखा तो उन्हें ख़ुदा के सिवाए माबूद समझ बैठे, उन्हें ये भी ध्यान न रहा कि ज़ुल्म की इन्तिहा कभी न कभी होगी, अभी परेशान लोगों को हक़ दिखाई नहीं दे रहा है, लेकिन अपने सरकश माबूद के पतन पर उन्हें सच्चाई नज़र आ जायेगी।

ये हक़ीक़त है कि सच्चाई सामने आकर रहती है और झूठ का पतन होकर रहता है। ये सच्चाई है और हिकमत की बात भी यही है। इसके साथ ये भी सच्चाई है कि पीड़ित एक दिन ज़रूर उठता है और ये न्याय की मांग है कि उसे अधिपत्य प्राप्त हो। ज़ुल्म की ताक़त टूटे। ये ख़ुदा की सुन्नत है। वर्तमान समय में मुसलमानों से ज़्यादा पीड़ित और वंचित कोई नहीं है और इस्लाम हक़ है। इसलिये इन्साफ़ यही है कि उम्मते मुस्लिमा को इसकी सआदत, इज़्ज़त व मर्तबा मिले क्योंकि ये इसका हक़ है और वो इस लायक़ है। पीड़ित के मसलूबा अधिकारों की वापसी के लिये एक शर्त है कि वो अपने ख़ुदी का एहसास और अपने अधिकारों की वापसी का जज़्बा पैदा करे। ज़ुल्म से लगातार सामना होने के कारण से मुसलमानों के दिलों में ये शऊर घर कर रहा है। यही एहसास अफ़ग़ान मुजाहिदीन के सत्ता प्राप्त करने का पेश ख़ेमा है। उन्हें मालूम हो गया था कि वो पीड़ित और धोखा खाये हुए हैं। उनके दिलों में ईमान व अमल, पुख़्ता यक़ीन, सई पीहम, धैर्य व त्याग का भाव ज़ुल्म की ज़्यादती के साथ बढ़ता रहा, यहां तक कि वो ज़ालिम पर ग़ालिब आ गये, ज़ुल्म की हद होती है, ज़ुल्म हद को पहुंचा।

वर्तमान समय में मुसलमान आलिमों को जिन मुसीबतों का सामना है वो मुसीबतें उनको मंज़िल से क़रीब कर रही हैं। इन ज़ुल्मों से एकता व जागरूकता हो रही है और उनका पथ प्रदर्शन हो रहा है। ये भाव उनमें अगर लगातार परवान चढ़ता रहा तो मुसलमान अल्लाह के फ़ज़ल से एक ज़बरदस्त ताक़त बनकर सामने आयेंगे और जब मुसलमानों को अपनी अस्ल ताक़त मिल जायेगी तो उनका वज़न वापिस आ जायेगा और दुश्मनों के लगाए हुए इल्ज़ामों का ख़ुद ब ख़ुद जवाब मिल जायेगा और ग़ुबार छट जायेगा जो इस पतन के युग में उन पर छा गया है। जिस तरह बारिश के आने से धूल गर्दा बैठ जाता है और फ़िज़ा साफ़ हो जाती है।

तीन गंभीर बीमारियां

फ़िरक़ा परस्ती – वहम परस्ती – हवस परस्ती

मौलाना अज़ीज़ुलहसन सिद्दीक़ी

ये तीनों बीमारियां ऐसी हैं जो हिन्दुस्तानी समाज को घुन की तरह चाट रही हैं और अब तक इनमें से किसी एक का भी सही इलाज नहीं हो सका है। अगर इलाज का मुनासिब और कारगर उपाय अपनाया गया होता तो यक़ीनन फ़ायदा हुआ होता। बिलाख़ौफ़ तरदीद कहा जा सकता है कि आज़ादी के बाद फ़िरक़ा वारियत के नाग को पाला गया और दूध पिला पिला कर मोटा किया गया है। जिस गिरोह को डसने के लिये उसे आज़ाद छोड़ा गया था, उसको तो उसने डसा ही साथ ही साथ भारत की गंगा जमुनी सभ्यता, क़ौमी एकता और धर्मनिरपेक्षता को भी डस गया। धर्मनिरपेक्षता का राग अलापने वाले राजनेताओं ने जुलूसों में कम्यूनलिज़्म के ख़िलाफ़ तक़रीरें तो ख़ूब की, मगर उसके इस्तीसाल की कोशिश बिल्कुल नहीं की। मुसलमानों को डर में डालकर उनके वोट तो बटोरे मगर सत्ता प्राप्त होने के बाद कोई अमली क़दम नहीं उठाया, उल्टे मुसलमानों को फंसाया और फ़िरक़ा परस्तों को खुली छूट दे दी।

ऐसा नहीं है कि केवल मुसलमान ही तबाह हुए। देश की छवि भी ख़राब हुई। दुनिया भर में देश की बदनामी हुई और भारतीय क़ौम वहशी और दरिन्दा घोषित की गयी। उत्तर प्रदेश में समाज वादी पार्टी ने साम्प्रदायिकता का नाग कुचलने का वादा किया था मगर उसने इस ओर कोई क़दम नहीं उठाया। सच्ची बात ये है कि न नियतें ठीक हैं न कुछ करने का इरादा है। यूपीए ने दंगा निरोधी क़ानून का ख़ाक़ा तैयार करके छोड़ दिया है लेकिन उसको लोक सभा में प्रस्तुत करने की हिम्मत नहीं की।

जहां तक वहम परस्ती का सवाल है तो उसकी जड़ें काफ़ी मज़बूत हैं। बड़ी मुश्किल ये है कि उसके डांडे मज़हब से मिला दिये गये हैं इसलिये ये ख़ूब पनप रही है। महाराष्ट्र की सरकार ने वहम परस्ती के विरुद्ध "वहम परस्ती और काला जादू बिल" हाउस में पेश करने के लिये तैयार किया और मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने एक प्रेस कान्फ़्रेंस में कहा कि "सरकार का वहम परस्ती के ख़िलाफ़ कानून बनाने का फ़ैसला ऐसी ताक़तो को मुंह तोड़ जवाब है जो उन्नति प्रियता के विचारों के विरोधी हैं" वहमपरस्ती और जादू टोने का चलन इस हद तक बढ़ गया है कि महाराष्ट्र सरकार ने अभी बिल तैयार किया था कि विरोधियों ने पूणे के एक समाजी कार्यकर्ता मिस्टर नरेन्द्र डाभोलकर (जो वहमपरस्ती और जादू टोने के विरोधी थे) की हत्या कर डाली। सरकार ने इस घटना के तुरन्त बाद इस बिल को एक आर्डिनेंस के द्वारा लागू करने का ऐलान कर दिया।

मामला इतनी दूर पहुंच गया कि भारत सरकार को भी संज्ञान लेना पड़ा। राज्य सभा अध्यक्ष हामिन अन्सारी के नेतृत्व में वहम परस्ती के ख़िलाफ़ बरसर पैकार सामाजिक कार्यकर्ता नरेन्द्र डाभोलकर की हत्या पर दुख प्रकट किया।

वहम परस्ती ऐसी बुरी बला है जिसने भारतीय क़ौम को पसमांदगी में डाल रखा है। अच्छे खासे पढ़े–लिखे लोग इसमें गिरफ़्तार नज़र आते हैं। कोई अपने बीवी–बच्चों को मार डालता है, कहीं तान्त्रिक औरतों पर ज़ुल्म करते नज़र आते हैं, अफ़सोस नाक बात ये है कि बहुत से मुसलमान भी इस तरह की हरकते करते हैं, दिमागी तौर पर कमज़ोर मरीज़ों को आमिलों के हवाले कर देते हैं जो उनका बुरा हाल कर देते हैं।

लखनऊ के प्रतिष्ठित स्थान गोसाईंगंज क्षेत्र में मुहम्मदाबाद नाम का एक गांव है, जहां झाड़–फूंक करने वाले बाबा मज़हर अली रहते हैं। दूर व नज़दीक से लोग उनके पास भूत–प्रेत का साया उतरवाने की ग़रज़ से आते हैं। रायबरेली ज़िला के मौज़ा गुरद्वारा का मुहर्रम अली अपनी बीवी के सर से भूत का साया उतरवाने की ग़रज़ से बाबा के पास गया तो बाबा ने बताया कि साये को दूर करने में कुछ दिन लगेंगे। मुहर्रम अली अपनी बीवी, दो सालियों और बेटे मुराद अली को बाबा की ख़िदमत में छोड़कर अपने घर चला गया। कुछ ही दिनों के बाद उसके घर पर ये सूचना आयी कि उसका बेटा मर गया, मुहर्रम अली रोता–पीटता वहां पहुंचा तो पता चला कि उसकी बीवी का भूत उतारने के लिये बाबा ने उसके बेटे को बुरी तरह ज़ख़्मी करके अधमरी हालत में मज़ार पर डाल दिया जहां उसकी मौत हो गयी।

अब तीसरी बीमारी हवस परस्ती पर बात करते हैं। जिन्सी आवारगी और बेराहरवी पर जैसी रोक इस्लाम ने लगायी है, दूसरे किसी धर्म ने नहीं लगायी है। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद स0अ0 ने ये कहकर बेराहरवी की जड़ काट दी कि "जिस जगह एक अजनबी मर्द हो और दूसरी औरत हो वहां तीसरा शैतान होता है" लेकिन अफ़सोस

की इस विषय में मुसलमान भी दूसरी क़ौमों की तरह गुमराही में पड़े हैं और मर्द व औरत के मेल–मिलाप से बच नहीं पा रहे हैं और इसके नुक़सान सामने आते जा रहे हैं।

लेखक एक बार दिल्ली की एक मशहूर दरगाह में जा पहुंचा, वक़्त मगरिब के बाद का था, अंधेरा अच्छी तरह फैल चुका था। हमारे दोस्त ने गद्दी नशीन साहब से मिलने का ख़्याल ज़ाहिर किया। जब हम उनके कमरे में पहुंचे तो देखा कि पीर साहब के सामने एक हसीन व जमील औरत जिसके जिस्म पर ख़ूबसूरत काला नक़ाब है मगर चेहरा खुला हुआ है बैठी हुई है। तीसरा कोई शख़्स वहां नहीं था। अल्लाह के रसूल स0अ0 का क़ौल हरगिज़ झूठा नहीं हो सकता। आप स0अ0 के कथनानुसार तीसरा शैतान ज़रूर मौजूद रहा होगा। हम वहां से उल्टे पांव वापिस हो गये।

हम इतना कह सकते हैं कि हमारे बुज़ुर्गों और पीरों को इन चीज़ों से परहेज़ करना चाहिये। बिरादरान वतन के यहां तो औरत–मर्द के मेल मिलाप के सिलसिले में न कोई एहतियात न कोई परहेज़। आज़ाद मेल–मिलाप, भीड़ में एकत्र होना, साथ में मिल कर बैठना, खाना–पीना सब रवा है। साधू और महात्माओं से तो बिल्कुल पर्दा जायज़ नहीं है, उसका नतीजा ये होता है कि आये दिन महात्माओं और गुरूओं की ओर से जिंसी ज़्यादती की ख़बरे आती रहती हैं। कुछ दिनों तक थू थू होती है फिर सब ख़त्म हो जाता है और 'अंधविश्वास' का राज होता है और इस प्रकार के लोग तावीलात से काम लेने लगते हैं। कुछ दिन पहले एक आत्मिक गुरू ने एक ऐसे भक्त की बेटी को हवस का शिकार बनाया जिसने गुरू जी को अपनी ज़मीन आश्रम के लिये दी थी। गुरू जी ने बेगुनाही का यक़ीन दिलाने वालों में उनकी स्त्री प्रवक्ता भी थी। हम यहां दिसम्बर 2012 की घटना नही बयान करना चाहते जो दिल्ली में पेश आयी थी जिसमें पैरामेडिकल की एक छात्रा के साथ न केवल ये कि बलात्कार किया गया बल्कि उसको जान से मार दिया गया।

ऐसी घटनाओं से प्रभावित होकर भारतीय हिन्दु महासभा के उपाध्यक्ष और विश्व हिन्दु सेना के अध्यक्ष स्वामी ओम जी की ओर से ये उपाय रखा गया कि बलात्कारियों के लिये इस्लामी शरई क़ानून लागू किया जाये। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ़ जस्टिस चंद्र चूण ने भी इसी प्रकार का उपाय रखा था।

बेशक इस्लामी क़ानून ऐसे जुर्मों पर रोक लगा सकते हैं शर्त ये है कि हम उनसे फ़ायदा उठाने के लिये सच्चे दिल से तैयार हों।

शेष : कुर्बानी – एक सकंल्प का नवीनीकरण

हर साहबे निसाब मुसलमान मर्द औरत पर कुर्बानी वाजिब होती है, और वो एक दुम्बा या उसी तरह के किसी जानवर को अल्लाह की राह में कुर्बान करके इस बात को स्वीकार करता है कि उसने अल्लाह के हुक्म के सामने सर झुका दिया और वो सुन्नत–ए–इब्राहीमी का पूरी तरह पैरोकार है।

लेकिन इस पैरवी की मांग सिर्फ़ ख़ून बहाने और जानवर ज़िबह करने से नहीं पूरी हो सकती है। जब तक हम अपनी पूरी ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के हर–हर लम्हे को इब्राहीमी तरीक़े का पाबन्द न बनाएं, और उस तक़वे का भी प्रदर्शन न करें, जो कुर्बानी की अस्ल रूह है। कुरआन करीम में इस पहलू की तरफ़ इशारा करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला के पास कुर्बानी का गोश्त और ख़ून नहीं पहुंचता।" (हजः 37)

बल्कि अस्ल चीज़ ख़ुदा का डर है जो उसके निकट स्वीकार्य होता है। इस आयत और इससे पहले वाली दोनों आयतों में ताकीद के साथ नफ़ी आयी है। यानि ये विचार बिल्कुल ग़लत है कि इन्सान साल में एक दिन जानवर ज़िबह करके ये ख़्याल करे कि अब किसी अमल की ज़रूरत नहीं। बल्कि याचित उस कार्य में दिल का वो डर है जो ईमान वाले को हर समय रहता है और हर छोटे–बड़े काम के समय वो इसका पाबन्द रहता है। पहली वाली आयत में भी यही फ़रमाया गया है कि नेकी हरगिज़ मुतहक़्क़िक़ नहीं हो सकती, जब तक कि महबूब चीज़ तुम कुर्बान न करो।

आज जबकि सारी इस्लामी दुनिया में कुर्बानी की ये रस्म अदा हो रही है। देखना चाहिये कि इसमें तक़वे की रूह कहां तक काम कर रही है। और हमने जिस कुर्बानी में हिस्सा लिया वह शुद्धता व प्रेम से कहां तक परिपूर्ण है। जो इसका अस्ल उद्देश्य है। इसी के साथ हमें ये भी नहीं भूलना चाहिये कि इस दीने हनीफ़ की तरफ़ इन्तिसाब होने के बाद हमारी ज़िन्दगी सरासर जद्दोजहद, कुर्बानी, त्याग व नष्ट होने का एक मज़हर बन जाती है। जिसकी मांग ये है कि हम सिर्फ़ साल में एक बार रस्मी तौर पर इस कुर्बानी में हिस्सा ले लें। बल्कि हम उससे ज़िन्दगी का वो सबक़ भी लें जो सैय्यदना इब्राहीम अलै0 ने दुनिया को दिया था और हक़ की राह में कुर्बानी की एक अज़ीम और अबदी मिसाले पेश की थी।

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ज़िबह व क़ुर्बानी: ये काम केवल अल्लाह के लिये किया जा सकता है। अगर ज़िबह व क़ुर्बानी अल्लाह के अलावा किसी दूसरे की रज़ा के लिये की जायेगी तो ये काम शिर्क होगा। अल्लाह तआला का इरशाद है: "कि मेरी ज़िबह, मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मरना बस अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये और उसी का मुझे हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला फ़रमाबरदार हूं।"

और जो भी जानवर ग़ैरुल्लाह के लिये छोड़ा जायेगा या अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़िबह किया जायेगा वो नजिस होगा।

ये मुश्रिकाना काम बहुत से लोगों के बीच चलन में है कि वो जानवर बुज़ुर्ग के नाम पर छोड़ देते हैं। उसको सम्मान देते हैं। कोई कहता है कि ये शेख़ सद्दू का बकरा है कोई कहता है कि अहमद कबीर की गाय है, ये फ़लां का जानवर है। किसी भी वली, नबी, जिन या किसी भी प्राणि के नाम पर जानवर छोड़ देना शिर्क का काम है और अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़िबह करने से वो जानवर नजिस हो जाता है और उस काम के करने वाले पर शिर्क का गुनाह आता है। इसलिये कि जो काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये होना चाहिये वो अल्लाह के अलावा किसी दूसरे के लिये किया। हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी रह0 तहरीर फ़रमाते हैं: "बहुत से लोगों ने ये नियम बना लिया है कि वो अल्लाह के वली, नेक लोगों, और अपने बुज़ुर्गों के लिये जानवर नज़र करते हैं, उन जानवरों को उनकी क़ब्र पर ले जाते हैं और ज़िबह करते हैं, फ़ुक़्हा का कथन है कि उन्होंने इसको शिर्क में गिना है।" (मकतूबात मुजद्दिद अलफ़े सानी रह0: 35–41)

मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि हज़रत अली रह0 ने एक किताब निकाली उसमें लिखा था, "अल्लाह उस पर लानत करे जो अल्लाह के अलावा किसी और के लिये ज़िबह करे।"

स्थान का सम्मान: अल्लाह तआला ने अपने सम्मान के लिये कुछ स्थान विशेष कर लिये हैं जैसे काबा, अरफ़ात, मुज़दलिफ़ा, मिना, सफ़ा व मरवा, मक़ाम–ए–इब्राहीम और सारी मस्जिद–ए–हराम, मक्का मुअज़्ज़मा बल्कि पूरा हरम, लोगों के दिलों में वहां पहुंचने का शौक़ डाल दिया है, लोग दूर–दूर से वहां पहुंचते हैं, तवाफ़ करते हैं, दिल के अरमान जी भर भर कर निकालते हैं। कोई चौखट से लिपटा है, कोई ग़िलाफ़ पकड़े हुए इल्तिजा कर रहा है, कोई वहीं रात–दिन बैठा अल्लाह की याद में लगा है, कोई अदब से खड़ा उसको देख रहा है, सफ़ा मरवा का चक्कर काटा जा रहा है। ख़ास दिनों में मिना, अरफ़ात व मुज़दलिफ़ा का वक़ूफ़ किये जा रहा है। सारा काम अल्लाह के सम्मान के लिये और उसकी बन्दगी के तौर पर हैं। अल्लाह उनसे राज़ी है। इस तरह के काम किसी और के सम्मान के लिये करना शिर्क है। किसी की क़ब्र के पास उसकी रज़ा के लिये चिल्ला करना, किसी जगह को मुक़द्दस व पवित्र मानकर दूर दराज़ का सफ़र करके आना और मन्नतें पूरी करना या किसी क़ब्र या मकान का तवाफ़ करना और उसके आस–पास की जगह को पवित्र समझना, वहां शिकार न करना, पेड़ का काटना, घास न उखाड़ना, और उस जैसे काम करना और उस पर दीन व दुनिया के फ़ायदे की उम्मीद बांधना ये सब शिर्क की बाते हैं क्योंकि ये सब काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास हैं। किसी ग़ैर के लिये इन कामों का करना शिर्क है।

इसी तरह किसी चीज़ को मुक़द्दस व पवित्र समझकर उससे उम्मीदें बांधना और उसका सम्मान करना जैसे किसी के नाम की छड़ी, ताज़िया, ताज़िया का चबूतरा, अलम, इमाम क़ासिम और पीर दस्तगीर की मेंहदी, शहीद के नाम का ताक़, लोग इन चीज़ों का सम्मान करते हैं, वहां जाकर नज़रें चढ़ाते हैं और मन्नतें मानते हैं, उसकी क़सम खाते हैं, ये सब काम शिर्क के हैं।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने इसकी ख़बर दी है कि लोग आख़िर दौर में इस तरह की चीज़ों को पूजने लगेंगे। तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत है: "क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बीले मुश्रिकों से मिल नहीं जायेंगे, यहां तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बीले अल्लाह के अलावा किसी और को पूजने लगेंगे।"

पूजने का मतलब यही है कि जो काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास हैं और जो सम्मान केवल अल्लाह के लिये विशेष हैं वह दूसरों का किया जायेगा। यही शिर्क फ़िलइबादा है, जिसमें उम्मत का एक बड़ा वर्ग लगा हुआ है।

भैंस की कुर्बानी का हुक्म

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

शरीअत ने कुर्बानी के जानवर तय कर दिये हैं और ये जानवर तीन हैं: 1– ऊंट, 2– गाय 3– बकरी अपनी सारी ज़िन्स दुम्बा, भेड़ समेत। इसीलिये हदीसों में इन्हीं तीन जानवरों का ज़िक्र है।

1. हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ि0 से मरवी है कि नबी करीम स0अ0 ने उनको भेड़ बकरियां इनायत फ़रमायी ताकि कुर्बानी के लिये सहाबा किराम रज़ि0 पर तक़सीम फ़रमा दें। (बुख़ारी: 5555)

2. हज़रत जाबिर रज़ि0 से मरवी है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: "गाय सात लोगों की तरफ़ से और ऊंट सात लोगों की तरफ़ से काफ़ी है।" (मुस्लिम: 2808)

अस्ल बात ये है कि कुरआन मजीद में कुर्बानी के जानवरों की तरफ़ इशारा करते हुए इन्हीं जानवरों का ज़िक्र है। इसीलिये सूरह हज में है: "और जितने अहले शरीअत गुज़रे हैं उनमें से हमने हर उम्मत के लिये इस ग़रज़ से मुक़र्रर किया था वो इन (मख़सूस) चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उनको अता फ़रमाये थे।" (सूरह हज: 34)

फिर उन ख़ास जानवरों की दूसरी जगह तफ़सील बताते हुए फ़रमाया:

"और ये मवेशी आठ नर व मादा (पैदा किये) यानि भेड़ व दुम्बा में दो क़िस्म नर व मादा और बकरी में दो क़िस्म नर व मादा (आगे है) और ऊँट में दो क़िस्म और गाय (में दो क़िस्म)" (सूरह अलईनाम : 133–135)

इसीलिये उलमा मुत्तफ़िक़ हैं कि केवल उन्हीं जानवरों की कुर्बानी हो सकती है किसी और जानवर की नहीं हो सकती है। साहबे बदाए फ़रमाते हैं: "रही उसकी जिन्स तो वो ये है कि जानवर तीन जिन्सो बकरी, ऊँट या गाय में से हो और हर जिन्स में उसकी नू और उसका नर और मादा और ख़स्सी या सांड सब दाख़िल हैं। इसलिये कि जिन्स का उन सब पर इतलाक़ होता है।" (बदाए सनाए: 205/4)

और अल्लामा इब्ने रुश्द रह0 फ़रमाते हैं:

"सब इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि मख़सूस जानवरों के अलावा से कुर्बानी जायज़ नहीं है।"(बदायातुल मुजतहिद: 430/1)

फिर उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ऊंट से मुराद उसकी हर क़िस्म है, चाहे वो बख़्ती ऊँट हो या एराबी, बकरी में भी उसकी सभी क़िस्म भेड़, दुम्बा, शामिल हैं, गाय की भी सभी क़िस्में उसमें शामिल हैं, इसलिये कि हदीसों में उनके जिन्सी नाम लिये गये हैं और जिन्स का इतलाक़ हर क़िस्म पर होता है।

फिर जमहूर के निकट भैंस भी गाय की ही एक क़िस्म हैं, लिहाज़ा उसकी कुर्बानी भी सही है। साहबे बदाए रह0 फ़रमाते हैं:

"बकरी ग़नम की एक क़िस्म है और भैंस गाय की एक क़िस्म है, इस दलील से कि इसको बाब–ए–ज़कात में ग़नम और गाय में मिला दिया जाता है।" (बदाए सनाए: 205/4)

अल्लामा नववी रह0 फ़रमाते हैं:

"अज़हिया में शरब जवाज़ ये है कि जानवर अनआम में से हो यानि ऊँट, गाय और बकरी इसमें ऊंट की सभी क़िस्में बख़ाती हैं और अराब और गाय की सभी क़िस्में यानि भैंस और ख़ालिस अरबी दरबानी और ग़नम की तमाम क़िस्में भेड़–बकरी और सबकी नर व मादा बराबर हैं, (आगे है) इसमें से किसी चीज़ में हमारे यहां कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।" (अलमजमूअ: 222/8)

मालूम हुआ कि उलमा भी इस पर क़रीब–क़रीब एक मत हैं कि भैंस गाय ही की एक जिन्स से है। किसी आयत या हदीस में ये नहीं आया है कि भैस गाय की जिन्स से है, कुरआन और हदीस में सिर्फ़ ये आया है कि गाय की जिन्स भी कुर्बानी के जानवरों में से है। (शेष पेज 11 पर)

यूरोप का एहसास–ए–कमतरी

वर्तमान युग में मुसलमानों को जितना मनहीसुल क़ौम मुश्किलों व मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है उतना किसी दूसरी क़ौम या धर्म के मानने वालों को नहीं करना पड़ा। इस्लाम का नाम लेने वालों को भिन्न–भिन्न विषयों और अलग–अलग बहानों से मुसीबतों में डाला जा रहा है और उनकी समस्याओं को हल करने के बजाए, गंभीर बनाया जा रहा है। वो जहां बहुसंख्यक हैं वहां की सरकारों को उनके ख़िलाफ़ भड़काया जा रहा है और रूढ़िवादिता का ख़तरा बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है कि वो इस्लाही और तरबियती कोशिशों की ताक़त इस्तेमाल करके रोकें, जिसकी वजह से न कोई मदरसा सुरक्षित है, न मस्जिद, न कारख़ाना, न व्यापार, हर जगह इस्माल को मिटाने के उपाय किये जा रहे हैं और अरबाबे सियासत और लेखक जो स्वयं को मानवता का ध्वजवाहक घोषित कर देते हैं, इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ प्रोपगन्डा करने में व्यस्त हैं। इस्लामी तरीक़ों का मज़ाक़ उड़ाते हैं और आम व ख़ास को इस्लामी ज़हन से भयभीत करते हैं।

इस इस्लाम विरोधी कार्यवाहियों की वजह से जो कभी–कभी इस्लाम विरोधी आंदोलन का रंग अपना लेती है। मुसलमान नौजवानों की बहुत बड़ी संख्यां ख़ुद मुस्लिम देशों में संकट मे हैं और वो अपने देश में बेबस है। अलगाव पसंद पश्चिमी रंग में रंगे हुए तत्व उस पर हावी हो गये हैं। इस्लाम के ख़िलाफ़ विषयों, तस्वीरों और कार्टूनों का प्रकाशन होता है और उसको राय की आज़ादी और मीडिया की स्वतन्त्रता का नाम दिया जाता है। लेकिन अगर कोई इस पर नफ़रत का इज़हार करे तो उसको कट्टरवादी और रूढ़िवादी कह कर उसके ख़िलाफ़ कार्यवाही की जाती है। इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस मौक़िफ़ की नफ़सियात का अगर निरीक्षण किया जाये तो पता चलेगा कि इसका कारण "एहसास–ए–कमतरी" है और इस्लाम की शान व शौकत और उसकी ताक़त और फ़ैलने की योग्यता से भयभीत है, जो पश्चिमी दुनिया पर सदियों से तारी है।

यूरोप अपनी एहसास–ए–कमतरी का इसी तरह एहसास करता है कि मुसलमानों की ऐसी तस्वीर पेश की जाए जिससे दुनिया के दिमाग़ से उनका रोब निकल जाए और उनके विरोधी, उन पर हावी हो जांए। वो इस्लाम को तंगनज़र और मुसलमानों को पसमांदा हाल बनाकर पेश करते हैं और इसकी कोशिश करते हैं कि इस्लामी दुनिया में ऐसे हालात पेश आंए कि जिनसे ये तस्वीर सामने आये और वो मुसलमानों को विभिन्न तरीक़ों से भड़काना चाहते हैं ताकि वो भावविभोर होकर ऐसा क़दम उठांए जिससे उनकी भावुकता प्रकट हो। अख़बारों में ऐसे विषय प्रकाशित होते हैं, जिसमें इस्लामी विरोध प्रदर्शनों को ग़लत तरीक़ों से पेश किया जाता है। कभी ऐसा कपड़ा निकाला जाता है जिसमें क़ुरआन करीम की आयतों का डिज़ाइन बना होता है और हद ये है कि ऐसे जूते तैयार किये जाते हैं जिनमें अल्लाह–रसूल स0अ0 का नाम होता है। बाज़ारों में ऐसे नये–नये प्रोडक्ट लाये जाते हैं जिनसे इस्लामी अक़ीदे व तरीक़े की उनमें अहानत होती है। इस तरह मुसलमानों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का ये सिलसिला जारी रहता है।

एहसास–ए–कमतरी ऐसी बीमारी है कि जो इस बीमारी का शिकार हो जाता है उसको किसी करवट सुकून नहीं मिलता और किसी लम्हा उसको क़रार नहीं आता और उसे हर वक़्त लगता है कि वो ख़तरे में है।

यही हाल इस समय पश्चिमी दुनिया का है। वह दुनिया पर हावी होने के बावजूद भयभीत है। उसे हर जगह इस्लाम का रोबदार चेहरा नज़र आता है। वह नमाज़ होते देखकर भयभीत है। वह मस्जिद की मीनारों को देखकर भयभीत है। उसे मदरसों से डर लगता है। उसे नक़ाब से इन्क़िलाब के आसार नज़र आते हैं और उसकी ताक़त जवाब देने लगती है और पश्चिमी ताक़त

के क़िले लरज़ते नज़र आते हैं। ये सच है कि एहसास–ए–कमतरी की छूत से कोई बचा हुआ नहीं है। लोग हों या समूह, क़बीले हो या ख़ानदान, किसी को उसके ज़ुल्म के आगे छुटकारा नहीं। इसीलिये रोज़ देखा गया है कि जो इस लानत में पड़ जाता है, वह हाथ धोकर इसके पीछे पड़ जाता है। वह हर समय इसी चिन्ता में रहता है कि कैसे उसको पराजित करे। वह अपनी इस नापाक मुहिम को अन्जाम देने के लिये जायज़ और नाजायज़ तरीक़े अपनाता है। अगर ज़माने ने साथ दिया और मौक़ा हाथ आ गया तो वो चूकता नहीं बल्कि इस सूरत में ये बहुत ही वहशियाना होता है।

यूरोप के अपने लम्बे इतिहास में मुसलमानों से दीनी व राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में जो कड़ुवे अनुभव हुए हैं, उसके कारण बदले की आग में वह सारे मूल्यों को रौंदे दे रहा है और बदले की आग में सारी दुनिया के मुसलमानों को समाप्त करने के लिये प्रयासरत है और इस क्रम में इसके प्रयासों ने रफ़्तार पकड़ ली है कि इस्लाम की जीवन व्यतीत करने की प्रणाली दुनिया पर फिर अपना सिक्का न जमा ले और अपना तिलिस्म न स्थापित कर ले और यूरोप की सीधी राह से भटकी हुई सभ्यता जो सिसकियां ले रही है वह दम न तोड़ दे। मसीही ताक़त और यहूदी दिमाग़ ज्ञान व चिन्ता के रास्ते से इस्लाम पर जो लगातार हमले कर रहे हैं, उस बात का उद्देश्य केवल और केवल ये है कि मुसलमानों का रिश्ता इस्लाम से कमज़ोर पड़ जाये बल्कि कट जाये। इसलिये इसकी कोशिश हो रही है कि मुसलमान बच्चों की परवरिश ऐसी हो कि वो पश्चिमी सोच का समर्थन करने वाले हों और भटकी हुई राह के सांचे में ढल जांए और इस्लाम से बेगाना हो जांए। पूर्वी भाषाओं के यूरोपीय ज्ञानियों और प्रचारकों ने इस काम को आगे बढ़ाने और इस मुहिम को तेज़ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और साम्राज्यी शासनों ने जातीय व भाषीय और क्षेत्रीय पक्षपात का सूर फूंक कर मुसलमानों की एकता को तोड़ने और बख़िया उधेड़ने का प्रयास किया और ये प्रयास जारी है।

शेष : भैंस की कुर्बानी का हुक्म

फिर जमहूर इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि भैंस गाय की जिन्स से है, इसके लिये कुछ हवाले दिये जा रहे हैं।

1– अल्लामा इब्ने तैमिया रह0 फ़रमाते हैं:

"भैंस गाय के मर्तबे में से है, इब्नुल मुन्ज़िर ने उसके मुतालिक इजमा नक़ल किया है। (फ़तावा इब्ने तैमिया: 37/25)

2– अल्लामा इब्ने क़द्दामा रह0 फ़रमाते हैं:

भैस गायों के हुक्म में होंगी, इसमें हमें किसी के इख़्तिलाफ़ की जानकारी नहीं और इब्नुल मुन्ज़िर रह0 फ़रमाते हैं: अहले क़लम में से जिसकी बातें याद रखी जाती हैं, उनमें से हर एक का इस पर इत्तिफ़ाक़ है और भैंस गाय की क़िस्म में से हैं, जैसा कि बख़ाती ऊंट की किस्म में से है। (अलमुग्नी : 470/2)

3– लुग़ात में भैंस को गाय की जिन्स क़रार दिया गया है।

उलमा के इत्तिफ़ाक़ और जानवरों के माहिरों के कथनों को देखकर जमहूर भैंस की कुर्बानी के जवाज़ के क़ायल हैं। ये अलग बात है कि जिन इस्लामी देशों में सहूलत के साथ गाय की कुर्बानी हो सकती है वहां एहतियातन गाय ही की कुर्बानी होती है। भारत की विशेष स्थिति के कारण गाय की कुर्बानी मुश्किल काम है अतः भैंस की कुर्बानी से मुताल्लिक़ जमहूर के क़ौल से फ़ायदा उठाया जा रहा है, किसी को इत्मिनान न होतो वो उसकी कुर्बानी न करे लेकिन जमहूर के क़ौल के बावजूद इस मौज़ू पर बहस करना, मैं समझता हूं कि अक़्लमन्दी की बात नहीं कही जा सकती है।

क़ुरआन की तिलावत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने क़ुरआन मजीद में एक हुरुफ़ भी पढ़ा, उसको एक नेकी दस गुने के बराबर मिलेगी। मैं ये नहीं कहता कि अलिफ़ लाम मीम एक हुरुफ़ है बल्कि अलिफ़ एक हुरूफ़ और लाम एक हुरुफ़ और मीम एक हुरुफ़ है यानि जिसने सिर्फ़ अलिफ़ लाम मीम पढ़ा तो उसको तीस नेकियाँ जो दस गुनी होकर तीन सौ तक पहुंच सकती हैं।

समाज का सुधार कैसे हो?

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا
اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعاً فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

अजीब व ग़रीब आयत

यह एक अजीब व ग़रीब आयत है। जो हमारी एक बहुत बड़ी बीमारी की पहचान कर रही हैं और अगर यह कहा जाये तो ज़्यादा न होगा कि यह आयत हमारी दुखती हुई रग पकड़ रही है। अल्लाह तआला से ज़्यादा कौन इन्सान की नफ़्स और उसके मिज़ाज और बीमारियों को पहचान सकता है। और दूसरे यह किइस आयत में हमारे एक बहुत बड़े सवाल का जवाब भी दिया गया है जो आजकल कसरत से हमारे दिलों में पैदा हो रहा है।

समाज को सुधारने की कोशिशें क्यों बेअसर हैं?

पहले वह सवाल बता देता हूं उसके बाद आयत का अर्थ अच्छी तरह समझ में आ सकेगा। कभी कभी हमारे और आपके दिलों में यह सवाल पैदा होता है कि आज हम दुनिया में देख रहे हैं कि इस्लाहे हाल और समाज सुधार की न जाने कितनी कोशिशें मुख़्तलिफ़ जहतों और मुख़्तलिफ़ गोशों से हो रही हैं। कितनी अन्जमुनें, कितनी जमाअते, कितनी पार्टियों, कितने लोग, कितने जलसे, कितने जुलूस, कितने इज्तिमा होते हैं। और सब का मक़सद यह है कि समाज में फैली हुई बुराइयों का दरवाज़ा बन्द किया जाये। समाज को सीधे रास्ते पर लाया जाये और इन्सान को इन्सान बनाने की फ़िक्र की जाये। हर एक के अग़राज़ व मक़ासिद में समाज सुधारने, फ़लाह व बहबूद जैसी बड़ी–बड़ी बातें दर्ज होती हैं। और बड़े बड़े दावे होते हैं। जो अन्जुमनें और जमाअतें इस काम पर लगी हुई हैं और जो ऐसे लोग इस काम में लगे हुए हैं अगर उनको गिना जाये तो शायद हज़ारों तक उनकी संख्या पहुचेगी और हज़ारों जमाअतें और हज़ारों लोग इस काम में लगे हुई हैं।

लेकिन दूसरी तरफ अगर समाज की आम हालत को बाज़ारों में निकल कर देखें, दफ़्तरों में जाकर देखें, जीती–जागती ज़िन्दगी को ज़रा क़रीब से जाकर देखेने का मौक़ा मिले तो महसूस होता है कि वो सारी कोशिशें एक तरफ़ और ख़राबी का सैलाब एक तरफ, समाज पर सुधार का कोई नुमायां असर नज़र नहीं आता, बल्कि ऐसा लगता है कि ज़िन्दगी का पहिया इसी रास्ते पर घूम रहा है, अगर उन्नति हो रही है तो बुराई में हो रही है, अच्छाई में नहीं हो रही है। तो ज़हन में ये सवाल पैदा होता है कि ये सारी कोशिशें समाज को बदलने में क्यों नाकाम नज़र आती हैं?एक दो मिसालें अपनी जगह हैं लेकिन कुल मिलाकर अगर पूरे समाज पर नज़र डालकर देखा जाये तो कोई बड़ा फ़र्क़ नज़र नहीं आता। इसका कारण क्या है?

बीमारी की पहचान

इस सवाल का जवाब भी अल्लाह तआला ने इस आयत में अता फ़रमाया है और हमारी एक बीमारी की पहचान भी कर दी है और ये आयत है जो ज़्यादातर हमारी निगाहों से ओझल रहती है, जिसके माने भी मालूम नहीं है, अर्थ भी नही पता है।

"ऐ ईमान वालों! तुम अपनेआप की ख़बर लो, अगर तुम सीधे रास्ते पर आ गये, तुमने हिदायत हासिल कर ली, सही रास्ता अपना लिया, तो जो लोग गुमराह हैं, उनकी गुमराही तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचायेगी, तुम सबको अल्लाह की तरफ़ वहां पर अल्लाह तआला तुम्हें बतांएगे कि तुम दुनिया के अन्दर क्या करते रहे हो।"

अपने हाल से ग़ाफ़िल और दूसरों की फ़िक्र

इस आयत ने हमारी एक बहुत बड़ी बुनियादी बीमारी ये बता दी कि ये सुधार की जो कोशिशें नाकाम नज़र आती हैं। इसका एक बड़ा कारण ये है कि हर व्यक्ति जब सुधार का झन्डा लेकर खड़ा होता है तो उसकी इच्छा यह होती है कि सुधार का आरम्भ दूसरा व्यक्ति अपने आप से करे, यह खुद दूसरों को बुला रहा है दूसरों को दावत दे रहा है। दूसरों को सुधार का पैग़ाम दे रहा है लेकिन अपने आप में और अपने हाल में तब्दीली लाने में गाफ़िल रहता है। आज

हम सब अपने गिरेबान में झांककर देखें तो पायेंगे कि हमारा तरीक़ा ये होता है कि हम समाज की बुराइयों की चर्चा मज़े के साथ करते हैं। लोग तो यूं कर रहे हैं, लोगों का तो ये हाल है, समाज तो इस हद तक ख़राब हो गया है, फ़लां को मैने देखा कि वो यह कर रहा था। सबसे आसान काम इस बिगड़े हुए समाज में ये है कि दूसरों पर इन्सान एतराज़ करे, टीका टिप्पणी करे, दूसरों के ऐब बयान करे कि लोग तो यूं कर रहे हैं और समाज के अन्दर ये हो रहा है। शायद ही हमारी कोई महफ़िल इस चर्चे से ख़ाली होती हो। लेकिन हमें कभी अपने गिरेबान में झांककर ये देखने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि खुद मैं कितना बिगड़ गया हूं, खुद मेरे हालात कितने ख़राब हैं, खुद मेरा तरीक़ा कितना ग़लत है, मुझे खुद सुधार की कितनी ज़रूरत है। बस दूसरों पर टिप्पणी करने का सिलसिला जारी रहता है। दूसरों की कमियां तलाशना जारी रहता है। इसका नतीजा यह होता है कि सारी बातचीत मज़ा लेने के लिये, महफ़िल जमाने के लिये ही रह जाता है। इसके परिणाम में सुधार की ओर कोई ठोस क़दम नहीं बढ़ पाता है।

सबसे बर्बाद व्यक्ति

एक हदीस में आप स0अ0 ने फ़रमायाः "जो शख़्स यह कहे कि सारी दुनिया तबाह व बर्बाद हो गयी है (यानि दूसरों पर एतराज़ करे कि वे बिगड़ गये हैं, उनके अन्दर बेदीनी आ गयी, उनके अन्दर बिगाड़ आ गया, वे बदउन्वानियां करने लगे) तो सबसे ज़्यादा बर्बाद शख़्स वो खुद वो है।" (मुस्लिम शरीफ़)

इसलिय कि दूसरों पर एतराज़ करने की वजह से ये कह रहा है कि वो बर्बाद हो गये, अगर उसको वाक़ई बर्बादी की फ़िक्र होती तो वो पहले अपने गिरेबान में झांकता, अपने सुधार की चिन्ता करता।

बीमार व्यक्ति को दूसरे की बीमारी की चिन्ता कहां?

जिस व्यक्ति के पेट में दर्द हो, चैन न आ रहा हो, वो दूसरों की छींको की क्या परवाह करेगा कि दूसरों को छींके आ रही हैं। नज़ला हो रहा है। खुदा न करे, अगर मेरे पेट में तेज़ दर्द है, तो मुझे अपनी फ़िक्र होगी, अपनी जान की चिन्ता होगी, अपने दर्द को दूर करने की चिन्ता होगी, अपनी तकलीफ़ मिटाने की चिन्ता होगी, दूसरों की बीमारी और दूसरों की मामूली तकलीफ़ों की तरफ़ ध्यान भी नहीं जायेगा, बल्कि ऐसा भी देखा गया है कि अगर अपनी तकलीफ़ मामूली है, और दूसरो की तकलीफ़ ज़्यादा है इसके बावजूद अपनी तकलीफ़ का ख़्याल इतना छाया होता है कि दूसरों की बढ़ी हुई तकलीफ़ भी नज़र नहीं आती।

लेकिन उसके पेट में तो दर्द नहीं

मेरी एक अज़ीज़ ख़ातून थी, उनके पेट में तकलीफ़ थी, और वो तकलीफ़ भयानक थी। उनको डॉक्टर के पास दिखाने के लिये किसी अस्पताल में ले गया, तो लिफ़्ट में ले जाते हुए देखा कि एक औरत व्हील चेयर पर आयी, उनके हाथ और पांव सब टूटे हुए थे और उन पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था, और उसकी बुरी हालत थी। मैंने अपनी अज़ीज़ ख़ातून को तसल्ली देते हुए कहा कि देखिये ये औरत कितनी परेशानी और तकलीफ़ में है, उसको देखने से आदमी को अपनी तकलीफ़ में कमी का एहसास होता है, और अल्लाह तआला का शुक्र ज़बान पर जारी होता है। तो जवाब में वो ख़ातून कहती हैं कि वाक़ई उसके हाथ–पांव टूटे हुए हैं मगर कम से कम उसके पेट में तो दर्द नहीं है।

जिस शख़्स को अपनी बड़ी बड़ी कमियों का एहसासन नहीं होता और वो दूसरों की मामूली कमियों को देखता फिरता है, ये एक बहुत बड़ी बीमारी है।

बीमारी का इलाज

अल्लाह तआला आयत के अन्दर फ़रमाते हैं कि ऐ ईमान वालो! पहले खुद की फ़िक्र करो और ये जो तुम कर रहे हो कि फ़लां शख़्स गुमराह हो गया, फ़लां शख़्स तबाह व बर्बाद हो गया। याद रखो कि अगर तुम सीधे रास्ते पर आ गये तो उसकी गुमराही तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचायेगी। हर इन्सान के साथ उसका अपना अमल जायेगा इसलिये अपनी चिन्ता करो। तुम सब अल्लाह के पास लौटकर जाओगे वहां वह तुम्हें बताएगा कि तुम क्या अमल करते रहे थे, तुम्हारा अमल ज़्यादा बेहतर था कि दूसरो का अमल ज़्यादा बेहतर था। क्या मालूम जिस पर एतराज़ कर रहे हो जिसके ऐब तलाश कर रहे हो, उसकी कोई अदा, कोई काम अल्लाह के यहां मक़बूल हो कि वो तुमसे आगे निकल जाये।

अपनी जांच पड़ताल की महफ़िल

हां! अगर किसी जगह महफ़िल ही इसी काम के लिये आयोजित हो कि उसके इस बात की चर्चा हो कि हम लोगों में क्या ख़राबियां हैं, और लोग इस नियत से महफ़िल में आयें कि उन बातों को सुनेंगे, समझेंगे और फिर उसके मुताबिक़ अमल करने की कोशिश करेंगे, तो फिर ऐसी महफिल आयोजित करना ठीक है। (शेष पेज 16 पर)

कुर्बानी
एहकाम और मसाएल

दुनिया की हर क़ौम और हर मज़हब का साल में कोई न कोई त्योहार ज़रूर होता है। इन्सानी फ़ितरत इसका तक़ाज़ा भी करती है कि साल में ख़ुशियों के इज़हार का भी कोई दिन होना चाहिये। इसीलिये दीन–ए–फ़ितरत इस्लाम में भी इन्सानी फ़ितरत की रिआयत रखी गयी है और साल में दो दिन ख़ुशियां मनाने के भी मुक़र्रर किये गये हैं। अबूदाऊद में हज़रत अनस बिन मालिक रह0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 मदीना तशरीफ़ लाये तो मदीना वालों को देखा कि उन्होंने साल में ख़ुशियां मनाने के दो दिन मुक़र्रर कर रखे हैं: आप स0अ0 ने पूछा: "ये कैसे दो दिन हैं?" सहाबा किराम रज़ि0 ने अर्ज़ किया: जाहिलियत के ज़माने में हम उन दोनों में खेल–कूद किया करते थे, आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया: "अल्लाह ने उन दिनों के बदले में उनसे बेहतर दो दिन तुमको इनायत फ़रमाये हैं, ईदुल अज़हा और ईदुल फ़ित्र।"

इनमें से ईदुलफ़ित्र रमज़ानुल मुबारक के बाद मनायी जाती है, जब अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के बन्दे पूरे एक महीने तक ख़ास वक़्त में खाने–पीने और नफ़्सानी ख़्वाहिश से परहेज़ करते हैं। दूसरी ईद यानि ईदुल अज़हा ज़िल्हिज्जा की दस तारीख़ को मनायी जाती है। यही हज का ज़माना भी होता है। हज और कुर्बानी के लगभग मनासिक और काम हज़रत इब्राहीम, हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलै0 की अलग–अलग कुर्बानियों और कामों की याद में मनाये जाते हैं। लेकिन दोनों ईदों में समान चीज़ ये है कि इसमे दूसरी क़ौमों के त्योहारों की तरह कोई शोर व गुल बिल्कुल नहीं है। दोनों में जो काम बताये गये हैं, उनमें इस्लाम की सादगी की झलक मिलती है। इन ख़ुशी के मौक़ो पर भी बन्दे अल्लाह की बड़ाई का नारा लगाते हुए बस्ती के बाहर ईदगाह या किसी मस्जिद में जाते हैं और अल्लाह के सामने दो रकआत नमाज़ अदा करके अपनी बन्दगी का इज़हार करते हैं। मानों ईद की नमाज़ मुसलमानों की ख़ुशी मनाने का नमूना हैं। मुसलमानों से मांग यही है कि ख़ुश के मौक़े पर भी अल्लाह के सामने सर झुका दें और उसके हुक्मों के सामने भी सर झुका दें। ईदुल अज़हा के मौक़े पर ईद की नमाज़ के अलावा ज़िल्हिज्जा के शुरू के दस दिन की अहमियत व फ़ज़ीलत भी अलग से बयान की गयी हैं। इसीलिये बुख़ारी में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: "इन दस दिनों से बेहतर दूसरे कोई भी ऐसे दस दिन नहीं है जिनमें अल्लाह को नेक अमल ज़्यादा महबूब हों।सहाबा ने पूछा: अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी नहीं?आप स0अ0 ने फ़रमाया, अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी नहीं सिवाये उस शख़्स के जो अपनी जान व माल के साथ निकला हो और उसमें से कोई चीज़ भी वापस न लाया हो। और तिरमिज़ी और इब्ने माजा की रिवायत में है कि आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की इबादत ज़िल्हिज्जा के दस दिनों से बेहतर और कोई ज़माना नहीं है, उनमें एक दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर और एक रात में इबादत करना शब क़दर में इबादत करने के बराबर है।"

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने सूरह फ़ज्र में जिन दस रातों की क़सम खाई है मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं, इन दस रातों से ज़िल्हिज्जा के पहले अशरे की रातें ही मुराद हैं। इनमें ख़ास तौर पर ज़िल्हिज्जा की 9/तारीख़ की बड़ी फ़ज़ीलत वारिद हुई है। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू क़तादा रज़ि0 की तवील हदीस में है कि: "अरफ़ा का रोज़ा रखने पर मेरा अल्लाह पर गुमान ये है कि उसे पिछले एक साल और आगे के एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देगा।" लेकिन अरफ़ा के रोज़ों की ये फ़ज़ीलत ग़ैर हाजियों के लिये है। हाजियों को इस रोज़े से मना कर दिया गया है ताकि अरफ़ात के मैदान के काम अच्छी तरह अन्जाम दे सकें। इसीलिये अबूदाऊद में अबूहुरैरा रज़ि0 की रिवायत आयी है कि आंहज़रत स0अ0 मक़ामे अरफ़ात में अरफ़ा का रोज़ा रखने से मना कर दिया है।

कुर्बानी: ज़िल्हिज्जा के महीने में सबसे अहम इबादत कुर्बानी है। इसीलिये हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं: नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया: "आदम की औलाद नहर के दिन जो अमल करता है उनमें अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब ख़ून बहाना (कुर्बानी करना) है। वो जानवर क़यामत के दिन अपनी सींगों, बाल और खुरों के साथ आयेगा और ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले ही अल्लाह के यहां मक़बूलियत हासिल कर लेता है, लिहाज़ा उसको ख़ुशदिली से किया करो।" (तिरमिज़ी, इब्ने माजा) साहिबे निसाब पर कुर्बानी करना अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब है,

इसलिये कि हदीस में नबी करीम स0अ0 का इरशाद नक़ल किया गया है कि: "जिसके पास वुसअत हो और कुर्बानी न करे वो हमारी ईदगाह के पास न आये।"

कुर्बानी का निसाब: कुर्बानी हर अक़्ल वाले बालिग़, मुक़ीम मुसलमान पर वाजिब होती है। शर्त ये है कि वो साढ़े बावन तोला (612 ग्राम) चांदी या उसकी क़ीमत का मालिक हो। और ये कि उसकी ज़रूरी ज़रूरतों से ज़्यादा हो, या व्यापारिक माल की शक्ल में हो या आवश्यकता से अधिक घरेलू सामान या रहने के मकान से ज़्यादा मकान हो। कुर्बानी और ज़कात के निसाब में एक फ़र्क़ ये भी है कि ज़कात में साल गुज़रने की शर्त होती है, लेकिन कुर्बानी में साल गुज़रने की शर्त नहीं है। इस ज़माने में निसाब का मालिक है तो कुर्बानी वाजिब होगी।

कुर्बानी के दिन: कुर्बानी के तीन दिन हैं। 10, 11 और 12 ज़िलहिज्जा। इनमें से अफ़ज़ल पहले दिल कुर्बानी करना है। अलबत्ता जहां ईद की नमाज़ जायज़ होती है वहां ईद की नमाज़ से पहले कुर्बानी करना जायज़ नहीं है। इसलिये बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत जन्दब की रिवायत है फ़रमाते हैं: नबी करीम स0अ0 ने नहर के दिन नमाज़ पढ़ाई, फिर ख़ुत्बा दिया, फिर कुर्बानी की और इरशाद फ़रमाया: जिसने नमाज़ पढ़ने से पहले कुर्बानी की थी वो इसकी जगह दूसरी कुर्बानी करे और जिसने कुर्बानी नहीं की थी वो अल्लाह का नाम लेकर कुर्बानी करे।

कुर्बानी के जानवर: कुर्बानी सिर्फ़ ऊंट, गाय, भैंस, बकरी, दुम्बा, भेड़ (नर–मादा दोनों) की जायज़ है। बक़िया जानवरों की जायज़ नहीं है। इसमें भी हदीस शरीफ़ में ये शर्त लगायी गयी कि मुसन्ना हो और ऐबों से ख़ाली हो। इसीलिये मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: "सिर्फ़ मुसन्ना की कुर्बानी किया करो यहां तक कि तुम पर तंगी हो तो भेड़, दुम्बा का छः माह का या उससे ज़्यादा का जानवर ज़िबह कर लिया करो।"

इन जानवरों में से हर एक का मुसन्ना अलग–अलग होता है। इसीलिये ऊंट का मुसन्ना वो है जो पांच साल पूरे कर चुका हो। गाय और भैंस का मुसन्ना वो है जो दो साल पूरे कर चुका हो, और बकरी और भेड़ और दुम्बा का मुसन्ना वो है जो एक साल पूरे कर चुका हो। लेकिन जैसा कि हदीस में गुज़रा है, दुम्बा अगर छः माह या उससे ज़्यादा का हो तो उसकी कुर्बानी की जा सकती है।

भेड़, बकरी की कुर्बानी सिर्फ़ एक व्यक्ति की तरफ़ से हो सकती है जबकि ऊंट व गाय इत्यादि में सात लोग शामिल हो सकते हैं, लेकिन शर्त ये है कि किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो और सबकी नियत कुरबत की हो।

ऐबों की तफ़सील: आंहज़रत स0अ0 ऐबों से पाक और उम्दा जानवरों की कुर्बानी फ़रमाया करते थे और उम्मत को भी ऐबों से पाक, उम्दा जानवरों की कुर्बानी की ताकीद फ़रमाया करते थे। हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि आंहज़रत स0अ0 ने हमको हुक्म दिया कि जानवर की आंख कान का जायज़ा लें और कान कटे–फटे और कान मे सूराख़ वाले जानवरों की कुर्बानी न किया करें। (अबूदाऊद, नसाई, इब्ने माजा)

अबूदाऊद, नसई और इब्ने माजा ही में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 से सवाल किया गया: किन जानवरों की कुर्बानी से बचा जाये?आप स0अ0 ने हाथ के इशारे से फ़रमाया: चार से! वो लंगड़ा जानवर जिसका लंगड़ापन ज़ाहिर हो, वो काना जिसका कानापन ज़ाहिर हो, ऐसा बीमार जानवर जिसकी बीमारी ज़ाहिर हो, और वो लाग़र ज़िसकी हड्डियों में गूदा ही न हो।

इन जैसी हदीसों से फ़ुक़्हा ने ऐबों के बारे में निम्नलिखित तफ़्सीलें बयान की हैं:

1– अंधे, काने और लंगड़े जानवर की कुर्बानी जायज़ नहीं है। उसी तरह उस बीमार और लाग़र जानवर की कुर्बानी भी ठीक नहीं जो अपने पैरों पर कुर्बानी की जगह तक न जा पाये।

2– जिस जानवर की दुम तिहाई से ज़्यादा कटी हो उसकी कुर्बानी भी नाजायज़ है।

3– जिस जानवर के दांत बिल्कुल न हों या अक्सर न हों उसकी कुर्बानी भी नाजायज़ है। यही हुक्म उस जानवर का भी है जिसके कान पैदाइशी तौर पर न हों।

4– जिस जानवर की सींग पैदाइशी तौर पर न हों, या बीच से टूट गये हों, उसकी कुर्बानी जायज़ है, लेकिन अगर सींग जड़ से उख़ड गयी हो तो असर दिमाग़ तक पहुंच जाता हैं।

5– ख़स्सी (बधिया) की क़ुर्बानी न केवल जायज़ बल्कि अफ़ज़ल और सुन्नत है। आंहज़रत स0अ0 से ख़स्सी की कुर्बानी करना साबित है।

कुर्बानी का तरीक़ा: अपनी कुर्बानी अपने हाथ से करना अफ़ज़ल है। लेकिन अगर कुर्बानी करना नहीं

जानता या किसी और वजह से ख़ुद भी नहीं करना चाहता तो कम से कम ज़िबह के वक़्त हाज़िर रहने की फ़ज़ीलत ज़रूर हासिल करे, बहुत से लोग इस वजह से मौजूद भी नहीं रहना चाहते, ये रूझान सही नहीं है।

कुर्बानी के वक़्त जो दुआंए मनकूल हैं, उनका पढ़ना अफ़ज़ल है, ज़रूरी नहीं है। सिर्फ़ ज़िबह के वक़्त बिस्मिलिल्लाह अल्लाहुअकबर कहना ज़रूरी है। कुर्बानी करते वक़्त नीचे दिये गये कामों का ख़्याल रखना चाहिये:

1– ज़िबह करने से पहले जानवरों को चारा खिला दिया जाये। भूखा–प्यासा रखना मकरूह है।

2– ज़िबह की जगह सहूलत से ले जाये, घसीट कर ले जाना मकरूह है।

3– क़िब्ला रुख़ बायें करवट लिटांए, उससे जान आसानी से निकलती है।

4– छुरी तेज़ रखे, कुन्द छुरी से ज़िबह करना मकरूह है।

5– छुरी जानवर को लिटाने से पहले तेज़ कर ले और उससे छिपाकर तेज़ करे।

6– एक जानवर के सामने दूसरे जानवर को ज़िबह न करे।

7– ज़िबह के बाद जानवर के ठन्डे होने से पहले न सर अलग करे न खाल निकाले।

8– सुन्नत ये है कि जब जानवर ज़िबह करने के लिये क़िब्ला की तरफ़ लिटांए तो ये दुआ पढ़े:

﴿إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفاً وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ☆ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ﴾

और ज़िबह करने के बाद ये दुआ पढ़े:

"اللهم تقبله مني كما تقبلت من حبيبك محمدٍ وخليلك ابراهيم عليهما الصلاة والسلام"

कुर्बानी का गोश्त: अफ़ज़ल ये है कि कुर्बानी के गोश्त के तीन हिस्से कर लें। एक हिस्सा अज़ीज़ व अक़ारिब के लिये, एक फ़क़ीरों के लिये और एक अपने लिये। लेकिन ये सिर्फ़ अफ़ज़ल है। वो पूरा गोश्त भी इस्तेमाल कर सकता है और पूरा हदिया और सदक़े में भी दे सकता है। कुर्बानी को गोश्त ग़ैर मुस्लिमों को भी दिया जा सकता है। खाल अपने इस्तेमाल में ले ये ग़रीबों को दे दे, लेकिन कुर्बानी का गोश्त या खाल बेची तो उसका ग़रीबों पर सदक़ा करना ज़रूरी हो जाता है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

शेष : समाज का सुधार कैसे हो?

इन्सान का सबसे पहला काम

इन्सान का सबसे पहला काम ये है कि अपने दिन रात का जायज़ा ले और फिर ये देखे कि मैं कितना काम अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ और उसके बताये हुए तरीक़ों के मुताबिक़ कर रहा हूं और कितना काम उसके ख़िलाफ़ कर रहा हूं। और अगर उसके ख़िलाफ़ कर रहा हूं तो उसके सुधार का तरीक़ा क्या है? अल्लाह तआला ये फ़िक्र हमारे और आपके दिलो में पैदा फ़रमा दे।

समाज क्या है

समाज किस चीज़ का नाम है? लोगों का समूह समाज बन जाता है, अगर हर व्यक्ति को अपने सुधार की चिन्ता हो जाये तो सारा समाज ख़ुद ब ख़ुद सुधर जायेगा। लेकिन अगर हर व्यक्ति दूसरे की चिन्ता करता रहेगा और अपने को छोड़ता रहेगा तो सारा समाज ही ख़राब हो जायेगा।

हज़राते सहाबा का तरीक़ा

हज़राते सहाबा किराम रज़ि0 के हालात के अगर आप देखेंगे तो ये नज़र आयेगा कि हर व्यक्ति इस फ़िक्र में था कि किसी तरह मैं ठीक हो जाऊं, किसी तरह मैं अपनी बीमारी को दूर कर लूं।

हज़रत हन्ज़ला रज़ि0 आप स0अ0 की बारगाह में हाज़िर होते हैं और कहते हैं, "या रसूलुल्लाह स0अ0! हन्ज़ला मुनाफ़िक़ हो गया।" आपने उनसे पूछा कि कैसे मुनाफ़िक़ हो गये, कहा या रसूलुल्लाह स0अ0! जब तक आपकी महफ़िल में बैठता हूं बड़ा असर होता है, हालात बेहतर करने की तव्वजो होती है, लेकिन जब बाहर निकलता हूं और दुनिया के कामों के अन्दर लगता हूं तो वो जज़्बा जो आपकी महफ़िल में बैठकर पैदा हुआ था, वह ख़त्म हो जाता है, यह तो मुनाफ़िक़ का काम है कि ज़ाहिरी हालात कुछ और हों और अन्दर कुछ और, इसलिये मुझे अन्देशा है कि कहीं मैं मुनाफ़िक़ तो नहीं हो गया।

आप स0अ0 ने तसल्ली दी कि हन्ज़ला तुम मुनाफ़िक़ नहीं हुए, बल्कि ये घड़ी–घड़ी की बात होती है। हर वक़्त दिल की कैफ़ियत एक जैसी नहीं होती है। किसी वक़्त जज़्बा ज़्यादा रहता है किसी वक़्त कम हो जाता है, इससे यह समझना कि मैं मुनाफ़िक़ हो गया हूं सही बात नहीं है। (मुस्लिम शरीफ़)

यह देश

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

अंग्रेज़ों की बिसात तुम्हारी इच्छा के विपरीत उलट दी गयी और मार्गदर्शन के वो बुत जिनकी स्थापना तुमने की थी, वो भी दग़ा दे गये। हालांकि तुमने यही समझा था कि ये बिसात हमेशा के लिये बिछायी गयी है और इन्हीं बुतों की पूजांए तुम्हारी ज़िन्दगी है। मैं तुम्हारे ज़ख़्मों को कुरेदना नहीं चाहता और तुम्हारी मुश्किलों में और बढ़ोत्तरी का मेरा मन नही है। लेकिन यदि कुछ अतीत के दर्दों की ओर पलट जाओ तो तुम्हारे लिये बहुत सी गाठें खुल सकती हैं। एक समय था कि मैंने भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति का एहसास दिलाते हुए तुम्हें पुकारा था और कहा था जो होने वाला है उसको कोई क़ौम अपनी नहूसत से रोक नहीं सकती। भारत की भविष्य में राजनीतिक क्रान्ति लिखी जा चुकी है और उसकी गुलामी की जंजीरे बीसवीं सदी की हवा से कटने वाली हैं। अगर तुमने समय के साथ क़दम मिलाने में देर की और लापरवाही की इस ज़िन्दगी को ही अपने मिजाज़ बनाए रखा तो भविष्य का लेखक लिखेगा कि तुम्हारे गिराह ने जो करोड़ो इन्सानों का एक गिराहे था देश की आज़ादी के बारे में वो रवैया अपनाया जो इतिहास के पन्नों से मिट जाने वाली कौमों का हुआ करता है।

ये ठीक है कि वक़्त ने तुम्हारी इच्छानुसार अंगड़ाई नहीं ली बल्कि उसने एक क़ौम के पैदाइशी हक़ के एहतराम में करवट बदली और यही वो इन्क़िलाब है जिसकी एक करवट ने तुम्हें बहुत हद तक डरा दिया है। तुम सोचते हो कि तुमसे कोई अच्छी चीज़ छिन गयी है और उसकी जगह बुरी चीज़ आ गयी है। हां तुम्हारी बेक़रारी इसीलिये है कि अपने से नीचे वाले के लिये किसी अच्छी चीज़ के लिये तैयार नहीं किया था और बुरी चीज़ को मलजा व मावा समझ रखा था। मेरी मुराद ग़ैर मुल्की गुलामी से है। जिसके हाथों तुमने मुद्दतों हाकिमाना तमअ का खिलौना बनकर ज़िन्दगी गुज़ारी है एक दिन था कि जब तुम्हारी क़ौम के क़दम किसी जंग के आरम्भ की ओर थे और आज तुम इस जंग के अन्जाम से बेफ़िक्र हो।

हमने हमेशा राजनीति को धर्म से अलग रखने की जो कोशिश की है। मैने उस कांटेदार वादियो में क़दम नहीं रखा। यही कारण है कि मेरी बहुत सी बातें इशारों में होती है। लेकिन आज जो कुछ होना है उसे बेरोक–टोक होकर कहना चाहता हूं, वो ये एक भारत का बंटवारा बुनियादी तौर पर ग़लत था। धार्मिक भिन्नताओं को जिस प्रकार हवा दी गयी ये उसका निश्चिम परिणाम था। यही विरोध प्रदर्शन जो हमने अपनी आंखों से देखे, ये देखो मस्जिद के बुलन्द मीनार तुमसे उचक कर सवाल करते हैं कि तुमने अपने इतिहास के पन्नों को कहा गुम कर दिया? अभी कल की बात है कि जमुना किनारे तुम्हारे क़ाफ़िलों ने और आज तुम हो कि तुम्हें यहां रहते हुए ख़ौफ़ महसूस होता है। हालांकि दिल्ली तुम्हारे ख़ून से सींची हुई है।

अपने अन्दर एक बुनियादी बदलाव लाओ। जिस प्रकार आज से कुछ समय पहले तुम्हारा जोश व ख़रोश बेजा था, उसी प्रकार तुम्हारा ये डर भी बेजा है। मुसलमान और बुज़दिली ये एक जगह जमा नहीं हो सकते हैं। सच्चे मुसलमान को न तो कोई डिगा सकता है और न ही कोई डरा सकता है। मैं कलाम, मैं दोहराने का आदी नहीं हूं, लेकिन मुझे तुम्हारी ग़फ़लत को देखते हुए बार बार ये कहना पड़ रहा है तीसरी ताक़त अपने घमन्ड का पिश्तारा उठाकर चली गयी है। जो होना था वो होकर रहा। सियासी ज़हनियत अपना पिछला सांचा तोड़ चुकी है और अब नया सांचा ढ़ल रहा है। अगर अब भी तुम्हारे दिलों का मामला बदला नहीं तो फिर हालत दूसरी है, लेकिन अगर वाक़ई में तुम्हारे अन्दर सच्चे बदलाव की ख़्वाहिश पैदा हो गयी है तो फिर उस तरह बोलो जिस तरह इतिहास अपनेआप को बदलता है। आज भी हम एक इन्क़िलाब के दौर को पूरा कर चुके हैं, हमारे देश के इतिहास के कुछ पन्ने ख़ाली हैं हम उन पन्नों का शीर्षक बन सकते है। मगर शर्त ये है कि हम इसके लिये तैयार भी हों।

मैं तुमसे ये नहीं कहता हूं कि तुम हाकिमाना शासन के दरबार से सर्टिफ़िकेट हासिल करो और काहिली की वही ज़िन्दगी अपनाओ जो ग़ैर मुल्की हाकिमों के ज़माने में तुम्हारी मजबूरी थी। मैं कहता हूं कि जो उजले नक़्श व निगार तुम्हें इस भारत के अतीत की यादगार के तौर पर नज़र आ रहे हैं। वो तुम्हारा ही क़ाफ़िला था उसे भुलाओ नहीं, उन्हें छोड़ो नहीं, उसके वारिस बनकर रहो, बदलाव के साथ चलो ये न कहो कि हम इस बदलाव के लिये तैयार न थे। बस अब तैयार हो जाओ, सितारे टूट गये लेकिन सूरज तो चमक रहा है। उससे किरनें मांग लो और उन अंधेरी राहों में बिछा दो जहां उजाले की सख़्त ज़रूरत है। आओ वादा करो कि ये देश हमारा है, हम इसके लिये है और इसकी तक़दीर के बुनियादी फ़ैसले, हमारी आवाज़ के बग़ैर अधूरे ही रहेंगे।

फ़य्याज़ी और सख़ावत के नमूने

प्रोफ़ेसर सैय्यद मुहम्मद इज्तिबा नदवी

इस्लामी इतिहास सख़ावत के नमूनों से भरा हुआ है। इस्लाम का श्रेष्ठ गुण ये भी है कि वो दूसरों पर ख़र्च करने, ग़रीबों और बेसहारा लोगों की मदद करने, पड़ोसियों और रिश्तेदारों का सहयोग करने का हुक्म देता है। मुसलमानों ने इन अधिकारों को अदा करने के सिलसिले में ऐसी मिसालें पेश कीं कि जिसका उदाहरण किसी और क़ौम में मिलना मुश्किल है। उन्होने कई बार अपने भाइयों और ज़रूरतमन्द लोगों की ज़रूरतों को पूरा किया है और खुद सब्र किया परेशानी उठाई और तकलीफ़ बर्दाश्त की है जिसकी तरफ़ कुरआन ने इशारा किया:

(अनुवाद: और उन लोगों का यही हक़ है जो राजधानी यानि मदीना में उन मुहाजिरीन के आने के पहले से क़रार पकड़े हुए हैं जो उनके पास हिजरत करके आता है। उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को जो कुछ मिलता है उससे ये अन्सार अपने दिलों में रश्क नहीं करते और अपने से मुकद्दम रखते हैं जबकि उन पर फ़ाक़ा ही हो, और वाक़ई जो व्यक्ति अपने को कन्जूसी से बजाए रखेगा ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं)

दीन की इन सारी विशेषताओं में नबी अकरम स0अ0 सबसे श्रेष्ठ थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स0अ0 सबसे ज़्यादा सख़ी थे। मगर जो फ़क़ीराना ज़िन्दगी बसर करते थे दादो दहिश में बादशाहों को शर्मिन्दा करते थे। एक बार इन्तहाई ज़रूरत के वक़्त एक ख़ातून ने चादर पेश की और आप स0अ0 ने उसे ओढ़ लिया। उसी समय एक व्यक्ति आया और उसने आप स0अ0 से कुछ ओढ़ने के लिये मांगा, आप स0अ0 ने चादर उतार कर उसको दे दी। क़र्ज़ लेकर ज़रूरत मन्दों की ज़रूरत पूरी करते ख़ास तौर से रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दिनों में बहुत ही फ़य्याज़ी फ़रमाते और इस महीने में जब हज़रत जिबराईल अलै0 तशरीफ़ लाते और आप से कलाम–ए–मजीद का दौर करते तो उस समय आप स0अ0 भलाई और लाभ पहुंचाने वाली बारिश और तेज़ हवा से भी ज़्यादा सख़ावत फ़रमाते। तिरमिज़ी की रिवायत है कि एक बार हुज़ूर अकरम स0अ0 की ख़िदमत में किसी ने नब्बे हज़ार दिरहम पेश किये। आप स0अ0 ने उसी समय सब बंटवा दिये। दिरहम बंट जाने के बाद एक भिखारी आया हुज़ूर स0अ0 ने फ़रमाया अब तो मेरे पास कुछ रहा नही, तुम मेरे नाम से कर्ज़ ले लो जब मेरे पास होगा मैं अदा कर दूंगा। हज़रत जाबिर रज़ि0 ने बयान किया कि ऐसा कभी न हुआ हुज़ूर स0अ0 से कुछ मांगा गया हो और आपने मना फ़रमा दिया हो। हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि0 से फ़रमाया कि: ऐ अबूज़र! मुझे ये बात पसन्द नहीं कि मेरे पास ओहद पहाड़ के बराबर सोना हो, और तीसरे दिन तक उसमें से मेरे पास एक अशर्फ़ी भी बच जाए, केवल कर्ज़ की अदाएगी के लिये रह सकती है। तो ऐ अबूज़र! मैं इस माल को दोनों हाथों से खुदा की मख़लूक़ में बांट के उठूंगा। एक रोज़ रसूलुल्लाह स0अ0 को छः अशर्फ़ियां मिलीं। आपने चार ख़र्च कर दीं और दो बच गयीं उनकी वजह से आपको पूरी रात नींद न आयी। उम्मुल मोमीनीन हज़रत आयशा रज़ि0 ने अर्ज़ किया ये तो मामूली सी बात है, सुबह ख़ैरात कर दीजिएगा, आपने फ़रमाया: ऐ हमीरा (ये हज़रत आयशा का लक़ब था) क्या पता मैं सुबह तक ज़िन्दा रहूं या नहीं?

एक वाक़्या अमीरुल मोमीनीन हज़रत उमर रज़ि0 के शब्दों में सुनिये फ़रमाते हैं कि तबूक की जंग के लिये लश्कर की तैयारी हुई तो मुसलमान बहुत तंगी मे थे मगर लोगों ने बड़ी फ़य्याज़ी से माल जमा किया। औरतों ने अपने ज़ेवर तक हुज़ूर अकरम स0अ0 की ख़िदमत में पेश कर दिये। फ़रमाते हैं कि उस समय मैं कुछ खुशहाल था ख़्याल आया कि इस बार हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से बाज़ी मार ले जाउंगा इसलिये मैंने अपना आधा माल लिया और खुशी–खुशी आप स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इतने में हज़रत अबूबक्र भी सामान लिये हुए मस्जिद–ए–नबवी में आये। आंहज़रत स0अ0 ने मुझसे पूछा: उमर! क्या लाये, मैंने कहा कि: अपने पूरे माल का आधा ले आया हूं और आधा घर वालों के लिये छोड़ आया हूं। हुज़ूर स0अ0 ने खुश होकर बरकत की दुआ दी। फिर हज़रत अबूबक्र से पूछा, अबूबक्र तुम क्या लाये, उन्होने कहा मेरे पास जो कुछ था सब ले आया हूं। फ़रमाया और घरवालों के लिये क्या छोड़ा है हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने जवाब दिया, अल्लाह और अल्लाह के रसूल काफ़ी हैं। हज़रत उमर रज़ि0 कहते हैं कि इसके बाद मैंने यक़ीन कर लिया कि अबूबक्र रज़ि0 का मुक़ाबला नामुमकिन है।

तुर्की
इस्लामी ख़िलाफ़त की राह पर

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

तुर्की एक यूरेशियाई देश है जो यूरोप और एशिया के बीच एक पुल की हैसियत रखता है। ये देश पश्चिमी एशिया में अनातोलिया द्वीप व दक्षिणपूर्वी यूरोप में बलक़ान तक फैला हुआ है। यूरोप व एशिया के बीच स्थापना के अनुसार तुर्की बहुत महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित है। जिसके कारण यह पूर्वी व पश्चिमी सभ्यता का संगम है। तुर्की 81 राज्यों में बटा हुआ है और हर राज्य कई ज़िलों पर निर्मित है। आम तौर पर राज्य अपनी राजधानी के नाम पर ही होता है। इसके बड़े राज्यों में इस्ताम्बुल, अनक़रा, बोरसा, क़ौनिया, इत्यादि प्रसिद्ध हैं। तुर्की की सीमाएं 8 देशों से मिलती हैं। जिनमें दक्षिण पश्चिम में बुलग़ारिया, ईरान और अज़रबैजान का क्षेत्र और दक्षिण पूर्व में ईराक़ और सीरिया शामिल है। इसके अतिरिक्त उत्तर में देश की सीमांए काला सागर, पश्चि में वाइजियन सागर व मरमरा सागर व दक्षिण में रोम सागर से मिलती हैं।

तुर्की की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था सन् 1923 ई0 में उस्मानी ख़िलाफ़त के पतन के बाद निर्मित की गयी थी जिसका नेतृत्व कमाल अता तुर्क कर रहे थे। यह सयुंक्त राष्ट्र व मोतमर आलमे इस्लामी का संस्थापक सदस्य और सन् 1949ई0 में यूरोपी मजलिस और 1952ई0 से उत्तरी औक़ियानूसी संधि का सदस्य है।

तुर्की के इतिहास में हालात व घटनाओं के अच्छे–बुरे उतार चढ़ाव की एक लम्बी दास्तान है। उस्मानी ख़िलाफ़त के पतन के बाद कमाल अता तुर्क ने उसकी कश्ती को डूबने से बचाया भौगोलिक स्तर पर उसे यूरोपीय शक्तियों की झोली में गिरने से उसे ज़रूर बचा लिया लेकिन साथ ही अपने "सुधार पसंद" बदलाव के द्वारा उसने पूरे देश से इस्लामी आत्मा का समापन कर दिया और इस्लामी ख़िलाफ़त का अमीन कहा जाने वाला ये देश इस्लाम की सुगन्ध से भी वंचित हो गया।

अतीत के झरोखों में देखा जाये तो तुर्की में न कोई राजनीतिक पार्टी तीसरी बार शासन का ताज पहन सकी और न कोई राजनेता या जरनल सत्ता की कुर्सी पर तीसरी बार काबिज़ हो सका। लेकिन हाल ही में हुए राष्ट्रपति के चुनाव में रजब तैयब उर्दगान 52 प्रतिशत वोट प्राप्त करके लगातार तीसरी बात सफल हुए और तुर्की को उन्नति के नये मार्ग पर अग्रसर कर दिया।

यूरोप व दूसरे देशों के विश्लेषकों ने तुर्की के चुनाव की पूरी निगरानी की। इस्राईल व अमरीका और उसके साथियों की योजना ये थी की उर्दगान को किसी भी कुर्सी तक पहुंचने से रोका जाये। लेकिन तुर्की की जनता ने अपनी इस्लाम प्रियता, पश्चिमी जागरुकता और उर्दगान के प्रति अपनी वफ़ादारी का सुबूत दिया और सवा पांच करोड़ वोटों में से उर्दगान के प्रतिद्विवन्दी अकमल उद्दीन को 38.8 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए। जबकि कुर्द राजनेता सलाहुद्दीन दिमियरतास को 9.1 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए।

तुर्की को इस्लामी उम्मत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उस्मानी ख़िलाफ़त पूरी दुनिया के लिये एक केन्द्रीय बिन्दु था। इसलिये पश्चिमी ताक़तों ने गहरी साज़िश के द्वारा ख़िलाफ़त का खण्डन कर दिया। इस प्रकार सन् 1923ई0 में उस्मानी ख़िलाफ़त की बिसात उलटते ही पश्चिमी ताक़तों ने इस्लामी दुनिया को छोटे–छोटे टुकड़ों में बांट कर उन्हें आपस में लड़ा दिया और वहां की सत्ता पर अपने पिट्ठू को बैठा दिया। तुर्की पर एक ऐसे जर्नल को बिठाया गया जो इस्लाम से बेज़ार और कट्टर पश्चिम वादी था। लेकिन आरम्भ में पश्चिमी मीडिया ने उसे एक हीरो के तौर पर पेश किया। तुर्की की जनता ने उसे अपना निजात दिलाने वाला और तुर्की का मसीहा समझा। 1925ई0 में कमाल अता तुर्क ने तुर्की को धर्मनिरपेक्ष देश के तौर पर परिचित कराया। देश में इस्लाम और इस्लामी कामों निषेध कर दिये गये। सेना को संविधान का रक्षक घोषित कर दिया गया। दीन और दीनी अधिपत्य को राजनीति से बिल्कुल निकाल दिया गया। धर्मनिरपेक्षता या इस्लाम से बेज़ारी को उन्नति का दूसरा नाम दिया गया, लेकिन इस पूरे युग में कमाली शासन ने तुर्की को बदनामी के सिवाए कुछ न दिया।

मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने तुर्की को इस्लामी विरासत से काटकर एक लोकतान्त्रिक धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में प्रस्तुत किया। 1938 ई0 में जबकि मुस्तफ़ा कमाल पाशा का इन्तिक़ाल हो गया मगर उसके जानशीनों ने हमेशा तुर्की को

हमेशा एक धर्मनिरपेक्ष देश की हैसियत से परिचित कराया। इसके बावजूद 1960 ई0 से 1980 ई0 के बीच तुर्की में चार सैन्य विद्रोह हुए जिसके परिणाम में सत्ता परिवर्तन कर दिया गया। इस प्रकार 1980 ई0 से तुर्की धर्मनिरपेक्षता के नाम सैन्य शासन के साये में था।

कमाल अता तुर्क ने तुर्की को एक ऐसा समाज दिया था जिसमें इस्लाम पसन्दों का घरों से बाहर निकलना मुश्किल हो गया था। अज़ानों पर पाबन्दियां लग चुकी थीं। मस्जिदों पर ताले डाल दिये गये थे। दाढ़ी रखना और इस्लामी पहचान अपनाना जुर्म था। औरतों का पर्दा करना निन्दनीय था। 1999 ई0 में फ़ज़ीलत पार्टी की एक मेम्बर मरवा क्वाक्ची पर्दा ओढ़कर ऐवान में आयी तो उस समय प्रधानमंत्री ने उन्हें न केवल संसद से निकाल दिया बल्कि उन्हें देश छोड़ने पर मजबूर कर दिया और मरवा अमरीका चली गयीं।

लेकिन 2002 ई0 में तुर्की ने एक क्रान्तिकारी मोड़ लिया। जब तैयब अर्दुगान की इस्लाम पसन्द जस्टिस पार्टी (।ज्ञच) को सत्ता प्राप्त हुई, और यही से तुर्की ने एक नये सफ़र का आरम्भ किया और आज वो तेज़ी से दीनी रूह, आर्थिक उन्नति और राजनीतिक दृढ़ता की ओर लौट रहा है।

पिछले बारह सालों में तुर्की ने उन्नति के नये नये पताका फहराये हैं। और "यूरोप का मर्दे बीमार" कहे जाने वाले इस देश का एक उभरती हुई ताक़त के रूप में उदय हुआ है। 2005 ई0 से पहले तुर्की के पास विदेशी पूंजी केवल एक अरब डालर थी जो जस्टिस पार्टी के सत्ता में आने के बाद केवल एक साल में 9 अरब डालर और फिर अगले ही 20 अरब डालर से ऊपर चली गयी।

जस्टिस पार्टी के सत्ता में आने के बाद आर्थिक मंदी 30 प्रतिशत से कम होकर केवल 7 प्रतिशत रह गयी। और बेरोज़गारी का अनुपात कम होते हुए केवल 10 प्रतिशत बची है। 2007 ई0 से 2011 ई0 देश की पैदावार में 9 प्रतिशत तक वृद्धि हुई। ये प्रतिशत चीन के बाद दुनिया के दूसरे बीस देशों में दूसरे नम्बर पर थी। आंकड़ों से हट कर इस समय तुर्की और तुर्क जनता दृढ़ता, उन्नति और ख़ुशहाली के ऐसे मार्ग पर अग्रसर है जिस पर वे गर्व का अनुभूत कर सकते हैं।

जस्टिस पार्टी की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण "पारदर्शी नेतृत्व" भी है। इस पार्टी ने दुनिया के सामने ये नमूना भी पेश किया कि इस्लाम पसंद नेतृत्व सत्ता में रहते हुए भी हर प्रकार के भ्रष्टाचार से पाक है। दूसरी मुस्लिम शासन हो या पश्चिमी नेतृत्व, वो आज जिस प्रकार आर्थिक और जिन्सी स्कैन्डलस में लिप्त हैं उनके लिये तुर्की का ये पारदर्शी नेतृत्व न केवल एक चैलेंज है बल्कि वहां की जनता के लिये एक संदेश भी है।

तुर्की में इस्लाम पसंद पार्टी की सफलता में जहां अन्दरूनी तत्व कार्यरत हैं वहीं अन्तर्राष्ट्री तत्वों को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता है। आलमी सतह पर तुर्की शासन ने एक बावक़ार और मज़बूत इस्लाम पसंद नेतृत्व की छवि प्रस्तुत की जिसके गहरे प्रभाव को पश्चिमी देशों ने बड़ी गम्भीरता से अनूभूत किया है। उनमें सबसे महत्वपूर्ण तुर्की संसद का वो फ़ैसला था जिसमें उसने अमरीका को ईराक के ख़िलाफ़ फ़ौजी कार्यवाही करने के लिये किसी भी क़ीमत पर अपनी ज़मीन देने से इनकार कर दिया था।

जुलाई 2009 ई0 में ओयग़वी मुस्लिम नेतृत्व के ख़िलाफ़ चीन की कार्यवाही की खुलकर निंदा की और उसे "मुस्लिम नस्ल कुशी" की संज्ञा दी।

13 मई 2010 ई0 में "फ्रेड फ्लोटेला" की घटना हुई, इस समुद्री सहायक बेड़े में तुर्की का एक जहाज़ भी शामिल था जो पीड़ित फ़िलिस्तीनियों के लिये दवा, कपड़े, और दूसरी ज़रूरी चीज़ें ले जा रहा था जिसे इस्राईली कमान्डोज़ ने निशाना बनाया और रजब तैयब अर्दुगान ने इस घटना की कड़ी निंदा की और तुरन्त इस्राईल से अपने सिफ़ारती संबंध समाप्त करने की घोषणा कर दी और अभी हालिया इस्राईल – ग़ाज़ा जंग में तुर्की ने ग़ाज़ा की भरपूर हिमायत की और अपने देश में उसने ज़ख़्मियों के इलाज की व्यवस्था की।

ये वो आन्तरिक व वाहय तत्व हैं जिनके परिणाम में तैयब अर्दुगान की पार्टी बारह साल से सत्ता में है और अब उसकी वर्तमान सफलता के बाद विश्लेषक इस बात का अन्दाज़ा लगा रहे हैं कि तुर्की में बढ़ते इस्लामी अधिपत्य के परिणाम में धर्मनिरपेक्ष विचार धुंधले पड़ते जा रहे हैं आने वाले थोड़े से समय में एक क्रान्तिकारी देश की हैसियत से उभर कर सामने आये और दुनिया के नक़्शे को ही बदल देगा।

अनमोल वचन

हज़रत मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई रह०

पैदाइश १५० हिजरी वफ़ात २०६ हिजरी

"मैंने इमाम शाफ़ई से बढ़कर अक़्ल व फ़िक़ में किसी को बेहतर नहीं देखा।"
हज़रत यहया बिन सईदुल क़तानी रह०

• हिस व लालच ऐसी बुराई है जिससे नफ़्स की गन्दगी का पूरी तरह से इज़हार होता है। ख़ासकर के ऐसी हिस जिसमें कंजूसी छिपी हुई हो।

• पारिवारिक मामलों में ज़्यादातर कशमकश इस वहज से रहती है कि शौहरों को माल से ज़्यादा प्यार होता है और बीबियां लालच से ज़्यादा मांगती हैं।

• सख़ावत का सही मतलब ये है कि इन्सान अपने किसी हक़ को या अपने से संबंधित किसी चीज़ को बग़ैर किसी तज़बज़ुब के दूसरों के हवाले कर देता है। जैसे अपना हक़ किसी को माफ़ कर देना। अपनी ज़रूरतों को रोक कर किसी की ज़रूरतों को पूरा करना। दूसरे के लिये अपने दिमाग़ को ख़र्च करना। दूसरे की अआनत के लिये अपनी इज़्ज़त को ख़तरे में डालना। या अपनी जान को ख़तरे में डालना। दूसरों को बचाने के लिये ख़ुद को पेश कर देना।

• पैसे व ताक़त के बेजा इस्तेमाल से बचने के लिये तवाज़ो अपनाना बहुत फ़ायदेमन्द है।

• तवाज़ो का मक़सद समाजी जीवन में ख़ुशगवारी पैदा करना है।

• इन्सानों की सियासत करने से ज़्यादा आसान चौपायों को अदब सिखाना है इसलिये कि इन्सान इल्म के न होते हुए भी अपने को आलिम समझता है और किसी की बात मानने के लिये तैयार नहीं होता।

• हुस्ने अख़्लाक़, फ़य्याज़ी, तवाज़ो, शुक्र एक बाअख़लाक़ आदमी की बुनियादी सिफ़ात हैं।

• दयानत, अमानत, हिफ़ाज़त, चश्मपोशी ये चार सिफ़ात इन्साने कामिल की अलामते हैं।

• जमाअती ज़िन्दगी में पूरी तरह से घुल जाना भी बुरे हमनशीन बनने की वजह होती है और कभी कभी बिल्कुल ही अलग–थलग रहना भी नफ़रत की वजह बन जाता है।

• अगर कोई शख़्स किसी इन्सान की इज़्ज़त उसके मेयार से ज़्यादा करे तो उसकी नज़र में तुम्हारी वो इज़्ज़त बाक़ी नहीं रहेगी।

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME-06

SEPTEMBER 2014

ISSUE-09

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
AT A GLANCE

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.